राज
कॉमिक्स
By संजय गुप्ता
संख्या : 01
नितिन मिश्रा
हेमंत कुमार
युगारंभ 2021 वर्ष
नागराज
नाग ग्रंथ
श्रृंखला खण्ड-1
आदिपर्व
pressy

राज कॉमिक्स के प्रिय पाठक मित्रों,

प्रणाम,

राज कॉमिक्स बाय संजय गुप्ता की नयी प्रस्तुति में आपका स्वागत एवं आभार व्यक्त करता हूँ।

अक्टूबर 2020 में जब मैंने अपने इस उपकर्म की घोषणा की थी तब सभी मित्रों ने बाहें पसार कर मेरा स्वागत किया और सभी ने यही कहा कि हम सभी आपके साथ हैं। आप सभी से मिला यही आश्वासन प्रेरणा बन कर साथ चला और मैं गत आठ माह में कॉमिक्स जगत की कुछ अनमोल कृतियाँ आप तक पहुंचा पाया। मुझे अपार हर्ष है कि आप सभी को मेरे द्वारा प्रकाशित सभी कॉमिक्स एवं नॉवेल्टी आइटम्स अत्यधिक पसंद आये और ये सभी कॉमिक्स प्रकाशन जगत के लिए अनुकरणीय बनीं। आज गर्त से उठकर अर्श की तरफ अग्रसर हो चला है सम्पूर्ण कॉमिक्स जगत। आपके इस उत्साहपूर्ण सहयोग के कारण ही मैं नरक नाशक नागराज की पूर्व घोषित श्रृंखला **नाग ग्रंथ** कॉमिक्स की योजना बना पाया, जिसका प्रथम भाग **आदिपर्व** आपके हाथों में है। मुझे विश्वास है कि मुझे आपका अमूल्य सहयोग हमेशा यूं ही मिलता रहेगा और मैं आपके हर एक सपने को पूरा कर पाऊंगा। अपना प्यार सदैव बनाये रखें और कॉमिक्स के उत्थान में साझेदारी निभाते रहें।

आपका
संजय गुप्ता!

राज कॉमिक्स By संजय गुप्ता

हमारा वायदा अच्छी कॉमिक्स
आपका वायदा केवल...
Only Raj Comics By Sanjay Gupta
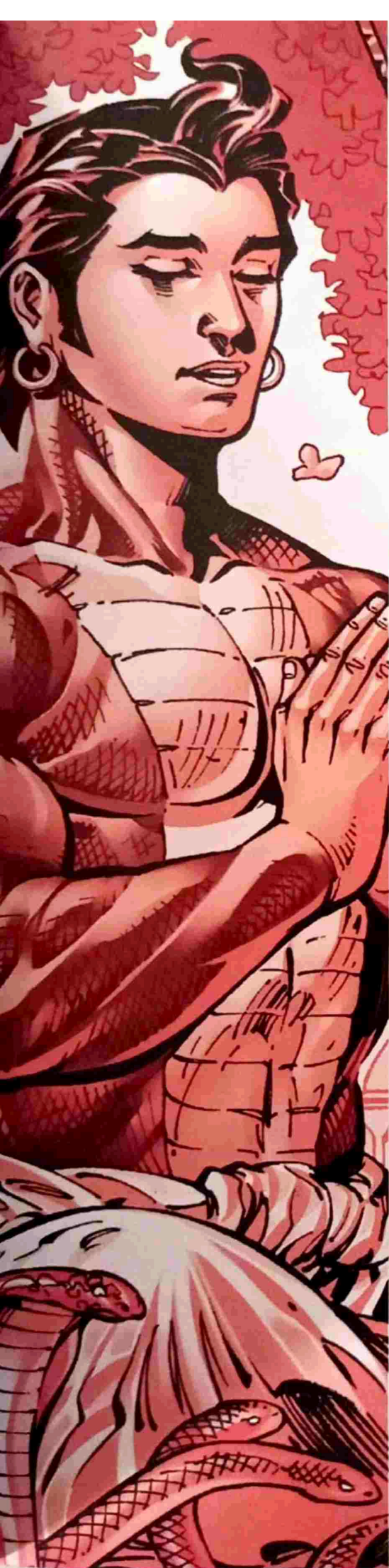
लेखक
नितिन मिश्रा

चित्रांकन
हेमंत कुमार

स्याहीकार
विनोद कुमार, जगदीश कुमार

रंगसज्जा
प्रदीप शेरावत, भक्त रंजन, अभिषेक सिंह, मोहन प्रभु

शब्द सज्जा एवं डिजाइन
मंदार गंगेले

मुखपृष्ठ चित्रांकन
हेमंत कुमार (चित्र), जगदीश कुमार (स्याही)
प्रसाद पटनाईक (रंग)

संपादक
संजय गुप्ता

राज कॉमिक्स है मेरा जनून
संस्थापक : राजकुमार गुप्ता, संजय गुप्ता

राज
कॉमिक्स
By संजय गुप्ता

आदिपर्व (नागग्रंथ श्रृंखला भाग 1)
मुद्रण तिथि - जुलाई 2021

Kh.No. 703, मेन रोड बुराड़ी, दिल्ली-110084

राज कॉमिक्स 1986-2021 - मनोरंजन का चौथा दशक
Narak Nashak Nagraj Created By Sanjay Gupta

फेसबुक पर हमारे ग्रुप **Raj Comics By Sanjay Gupta** से जुड़ें।

sales.alphabook@gmail.com
visit us at www.rajcomicsuniverse.com

 rajcomicsbysg rajcomicsbysanjaygupta rajcomicsbysanjaygupta

मानव के जीवन का सही मायने में आरम्भ तब होता है जब वह अपने अस्तित्व का असल उद्देश्य तलाशता है।
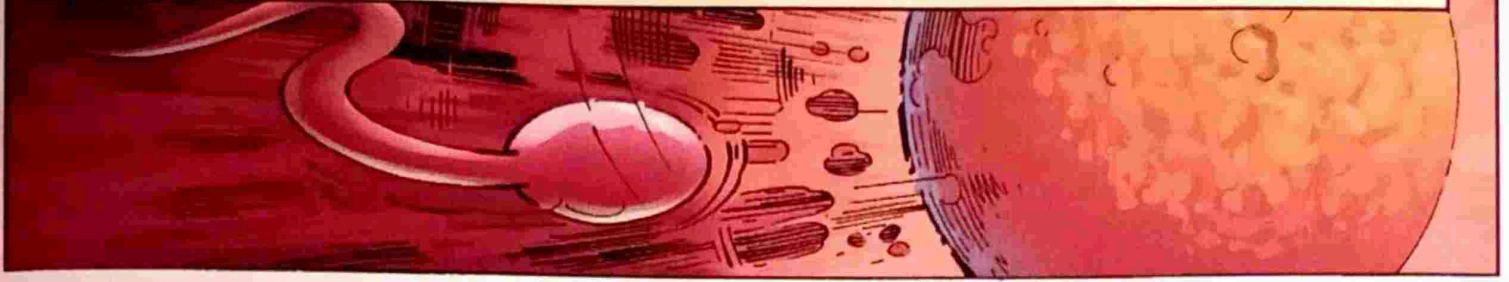
जीवित तो सभी हैं, परन्तु अपने अस्तित्व के असल उद्देश्य पर चिन्तन वही करता है जिसका जीवन मृत्युतुल्य कष्टों से गुजरा हो।
जिन कष्टों का आरम्भ भी मनुष्य की उत्पत्ति के साथ ही हुआ।
मृत्युतुल्य कष्ट, जिसने मृत्यु पर विजय प्राप्त करना सिखाया।
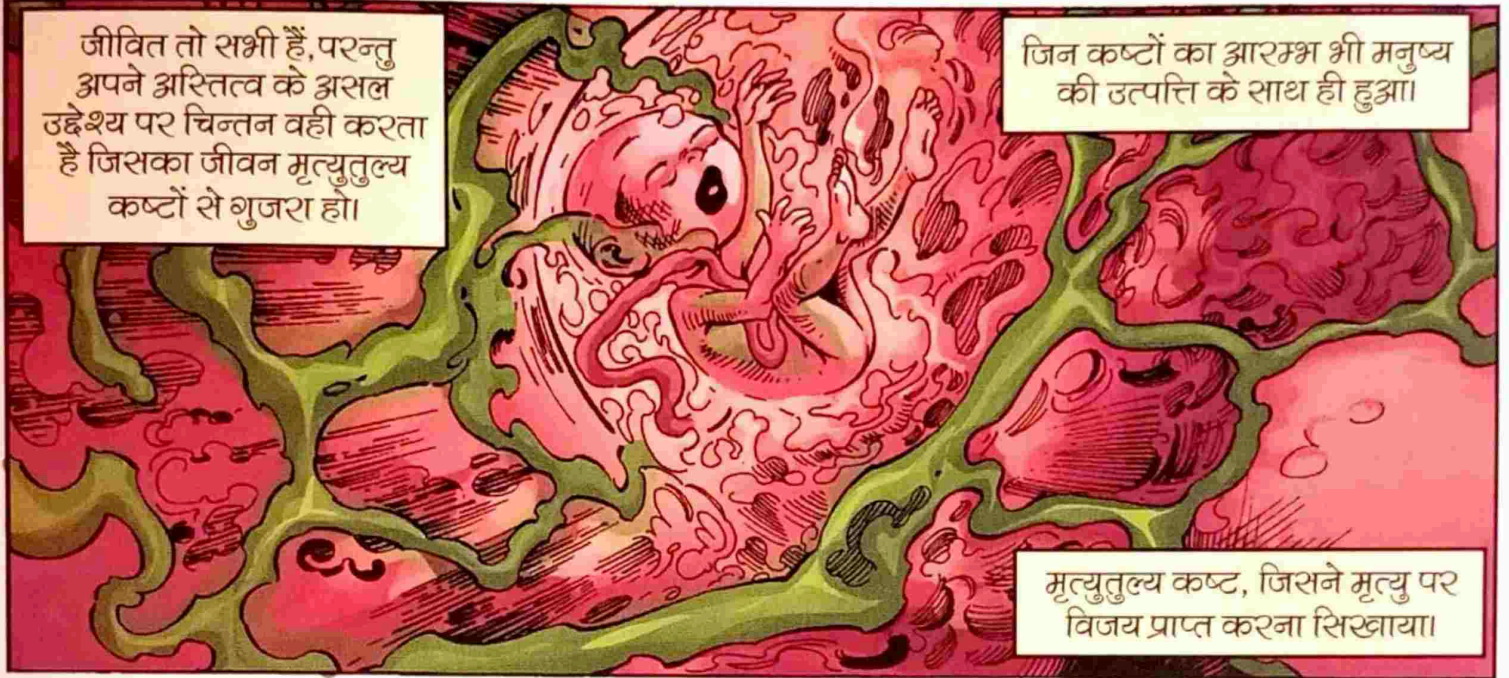
बचपन, इंसान के जीवन का सबसे बहुमूल्य काल है।
निर्बोध, निष्पाप, निष्कपट।
उवाँ!!
मेरा बेटा! मेरा आविष्कार!!

कहते हैं मनुष्य का जीवन चक्र भी समयचक्र की भांति अपनी दुम को खाते हुए अंतहीन वृत्त में घूमता हुआ एक सर्प है।
जीवन में घटनाएं एक निर्धारित प्रतिमान की भांति अपना स्वरुप समय अनुसार बदल कर मनुष्य के समक्ष आती हैं।
तुझे सूरज कहूं या चंदा, तुझे दीप कहूं या तारा... मेरा नाम करेगा रौशन, जग में मेरा राजदुलारा। मेरा राज!

हम अपनों की सहायता से गिर कर संभलना सीखते हैं।
उवाँ... पापा तोत!
अरे! उठ जा मेरे बेटे, यह मामूली चोट मेरे बेटे को रुला नहीं सकती।
आने वाले समय में बड़ी से बड़ी चोट हंसते हुए सह जाएगा तू! समझा!! चल उठ जा पापा का बेटा!
अपनों के लिए लड़ना सीखते हैं।
प्रेम करना सीखते हैं।
प्रेम के लिए सर्वस्व न्योछावर करना सीखते हैं।

उपरोक्त घटनाक्रम की विस्तृत जानकारी के लिए पढ़ें नरक नाशक, नरक नियति, नरक दंश व नरक आहुति।
नरक नाशक उत्पत्ति श्रृंखला संयुक्त संस्करण में भी उपलब्ध।

अपनों से मिले विश्वासघात के मृत्युतुल्य कष्ट और प्रेम को खोने का नरक दंश झेलता हुआ मनुष्य ही अपने अस्तित्व के उद्देश्य पर चिंतन कर सकता है और अस्तित्व का मार्ग धर्म तक ले जाता है। धर्म, जो किसी बालक के सामान ही निश्छल और अबोध होता है।
हर-हर महादेव शम्भू, काशी विश्वनाथ गंगे
हू अकबर अल्लाह!!!!!
उठो भाई जान, इफ्तार का समय हो गया है।
अम्मी ने ये गरमा-गरम पकोड़ियाँ बनाई थी, चार ही थी मैं ले आया। दोनों मिल कर खा लेंगे।
अम्मी कहती हैं कि भोले बाबा की नगरी में कोई भूखा नहीं सोता।

पिछले तीन-चार रोज से यहीं पड़े रहते हो कम्बल ओढ़ के, तुमको पहले यहां नहीं देखा। कहां से आए हो? कोई फकीर हो क्या?
यह मासूम बच्चा मुझे घाट की सीढ़ियों पर बैठा कोई भिखारी समझ रहा है...और यही तो मैं चाहता हूं।
फकीर ही समझ लो, बेटा, मुझसे ज़्यादा खाली झोली भला किसकी होगी!
रिश्तों से खाली, अपनों से खाली, अपने अस्तित्व बोध से खाली, वाकई, मुझसे बड़ा फकीर भला कौन होगा इस दुनिया में।
अपने अस्तित्व की तलाश मुझे काशी ले आई, यहां आते ही दशाश्वमेध घाट पर नागाल से सामना हो गया।
अगर नगीना ने उसे अपने तन्त्र जाल में नहीं फंसाया होता तो...
...बच्चों की जान बचाने के लिए मुझे वाकई नागाल की शर्त मान कर अपना सिर काटना पड़ता।
और इसके बाद मेरा अन्वेषण आरम्भ हुआ उस मंदिर की तलाश में, जहां मैं कालदूत का दिया हुआ शिवलिंग स्थापित कर सकूँ।
अद्भुत है वह शिवलिंग।
जिस प्रकार चुम्बक के समान कोण एक दूसरे के सामने रखने पर विकर्षण उत्पन्न करते हैं...

...किसी भी मंदिर में शिवलिंग स्थापित करने की कोशिश पर विकर्षण उत्पन्न करता था।
नहीं, नगीना! काशी विश्वनाथ मंदिर में भी शिवलिंग स्थापित नहीं हुआ।
हन हन हन
बोल बम!
हर हर महादेव!
मुझे जल्द ही समझ आ गया कि बनारस को मन्दिरों का शहर क्यों कहते हैं।
अब तक हम अनगिनत मन्दिरों में माथा टेक चुके हैं नगीना।
कहीं भी यह शिवलिंग स्थापित नहीं हुआ।
इस तरह तो अंवेषण करते-करते कोई साधारण नाग भी सौ वर्ष पूर्ण कर के इच्छाधारी बन जाए।
मैं तुम्हारी दुविधा समझ रही हूं, नागराज और शायद मेरे पास इसका समाधान है।
कैसा समाधान?
शमशान साधना। तुमने बनारस के मणिकर्णिका घाट के बारे में सुना है?
मणिकर्णिका घाट, संसार की इस सबसे पुरातन नगरी के सर्वप्रथम घाटों में से एक, माता सति का शक्तिपीठ है।
भगवान् विष्णु के कठोर तप करने पर महादेव और माता पार्वती यहां प्रकट हुए थे।
कहते हैं हजारों सालों से इस शमशान की अग्नि प्रज्ज्वलित है, जो ना कभी बुझी है और ना ही इस सृष्टि के अंत तक कभी बुझेगी... अलख निरंजन।
तुम्हारी जानकारी बिलकुल सही है, नागराज!...
इसीलिए यह शमशान तंत्र साधना हेतु सर्वोपयुक्त स्थान है।
नगीना ने मणिकर्णिका घाट के समीप एक निर्जन स्थान पर अपनी तंत्र साधना आरम्भ कर दी।
अब मुझे नगीना की तंत्र साधना समाप्त होने की प्रतीक्षा करनी थी।
नागराज के रूप में अनावश्यक ध्यानाकर्षण से बचने हेतु मैंने यह रूप धरा और यहां अस्सी घाट पर समाधि लगा कर बैठ गया।

जब मेरी दृष्टि इन कचरा बीनते बच्चों पर पड़ी और मैं कुछ देख कर दंग रह गया।
इन मासूम बच्चों को पता भी नहीं है कि पैसे का लालच देकर इनसे क्या करवाया जा रहा है।
ये बच्चे भी तुम्हारे साथी हैं?
कादिर, शेरू, जमाल, रशीद ये लोग पहले हमारे साथ ही कचरा बीनते थे, पर अब ये हमारे साथ नहीं हैं।
क्यों?

क्योंकि अब ये लोग दिलावर खान के लिए काम करते हैं, वह इनको मोटा पैसा देता है।
क्या मुझे इस दिलावर खान के पास लेकर चल सकते हो, अब्दुल?
हेहेहे...तो तुमको भी इनके जैसे कचरा बीन के पैसे बनाना है।
पर तुमको नहीं लेगा वह, सिर्फ बच्चों को लेता है।

मुझे उसके पास ले चलो, तुम्हें इनाम मिलेगा।

हेहेहे...वाह रे फकीर! तुम्हारे पास खाने को नहीं फिर इनाम भला क्या दोगे?
खैर छोड़ो, तुम भी क्या याद करोगे कि अब्दुल रईस से पाला पड़ा था।
आओ मेरे पीछे।
उन अखबारों में लिपटे हुए कलपुर्जे वास्तव में ऑटोमैटिक वेपन्स और एटॉमिक बम के हैं।

हम भी दिलावर के लिए कचरा बीन कर पैसा बनाते पर अम्मी ने मना कर दिया।
अम्मी कहती हैं कि दिलावर खान अच्छा आदमी नहीं है, उसका पैसा हराम है।
मैंने उन बच्चों के पीछे पहले अपने सूक्ष्म सर्प भेजे थे लेकिन हर बार मेरे सूक्ष्म सर्पों से मेरा मानसिक संपर्क टूट गया यानी कि मेरे सैनिक मारे गए।

मेरे सूक्ष्म सर्पों को मारने वाला कोई साधारण इंसान नहीं हो सकता।
सारे पुर्जे दुरुस्त हैं भाईजान।
शाबाश हरामी के पिल्लों।
अपने पैसे उठाओ और दफा हो यहां से, अगली बार कचरा कब बीनना है तुम्हें बता दिया जाएगा।
अपने भाई जान के पुर्जे भी चेक कर लो, ज्यादा देर दुरुस्त नहीं रहने वाले।
कौन है बे तू, सूअर के पिल्ले! पकड़ो साले को!!
हथियारों के छोटे पार्ट्स की मासूम बच्चों से तस्करी कराने की तरकीब तुझ जैसे जाहिल की तो नहीं हो सकती। बता किसके लिए काम करता है तू?
यह क्या कर रहे हो फकीर-ए-आजम, मरवाओगे क्या!!
खत्म कर दो इसे! इन पिल्लों को भी भून डालो, कोई जिंदा बच कर जाने ना पाए।
यह कोई साधारण, अदना सा आतंकवादी और उसकी गुर्गा पार्टी है, लेकिन मेरी सर्पइन्द्रियां मुझे किसी बड़े खतरे के संकेत दे रही हैं।
अगले ही पल मौत के शोले मासूमों की ओर लपलपा उठे।
भागो!! सब मारे जाएंगे!!
रेटा टा टा टा

लेकिन मौत के लपलपाते शोलों का मुकाबला उन लहराते जीवन रक्षकों से था।
और ऐसे मुकाबलों में उन जीवन रक्षकों को मौत को मात देने में महारथ हासिल थी।
सांप!! इतने ढेर सारे सांप!! ये तो गोलियां मुंह में पकड़ रहे हैं!
हमने सुना है जहां पहले सांप आते हैं...।
...फिर वहां आता है नागराज!!
मेरे हुजूर...आपने कहा था कि हमारी रक्षा करेंगे! मुझे और मेरे आदमियों को बचाइये इस यमदूत से।
निश्चिन्त रहो, दिलावर! यह यमदूत है तो मैं यमराज हूं, भला मेरा आदेश कैसे टालेगा यह।

नागराज को खतरे का आभास हो रहा था...
मेरी नागइन्द्रियां किसी बहुत बड़े खतरे के तीव्र संकेत दे रही हैं। दिलावर खान का यह सरपरस्त आखिर है कौन?
कौन हो तुम?
मैं एक छलावा हूं नागराज। मैं वही हूं जो तुम हो...
हे बाबा गोरखनाथ! यह क्या मायाजाल है!
...मैं नागराज हूं!
और तू दुनिया का पहला प्राणी है जिसे अपने ही हाथों मृत्यु प्राप्त होगी वह भी बिना आत्महत्या किए...

और तेरे जाने के बाद दुनिया कभी तेरी कमी महसूस नहीं करेगी...मैं हूं ना!!
कौन है यह? स्नेक स्टाइल कुंग-फू की हूबहू वही शैली जो सिर्फ मैं प्रयोग करता हूं।
वाकई ऐसा लग रहा है जैसे मैं खुद से ही लड़ रहा हूं।
या अल्लाह! दो-दो नागराज!!
बच्चों के साथ आए मेरे सूक्ष्म जासूसी सर्पों को इसी ने मारा होगा।

हां जहरीले! सही समझा, तेरे नन्हे-मुन्ने सपोले मैंने ही कुचले हैं।
हे बाबा गोरखनाथ! यह तो मेरे विचार पढ़ रहा है।
मैंने कहा न जहरीले, मैं तेरा ही अक्स हूं।
तेरे दिल-ओ-दिमाग में उमड़ता ऐसा कोई विचार, ऐसा कोई डर नहीं जो मुझसे छुप जाए।
जैसे कि मैं जानता हूं कि तू इन नन्हें-मुन्ने पिल्लों की सुरक्षा को लेकर मन ही मन डर रहा है... और तेरा डर गलत भी नहीं है।
सांप अगर शरीर के अंदर रहते हैं तो इसका यह मतलब तो नहीं कि उनको भूख नहीं लगती। मेरे सापों को चूहे खाना वैसे भी बहुत पसंद है।
नागराज बचाओ।
आश्चर्य! इसकी कलाइयों से भी सर्प निकल रहे हैं।
हाहाहा...ये पिल्ले नहीं तेरे सांप ही सही! बर्गर मिले या चाउमीन, मतलब पेट भरने से है।
त्रिसर्पी!
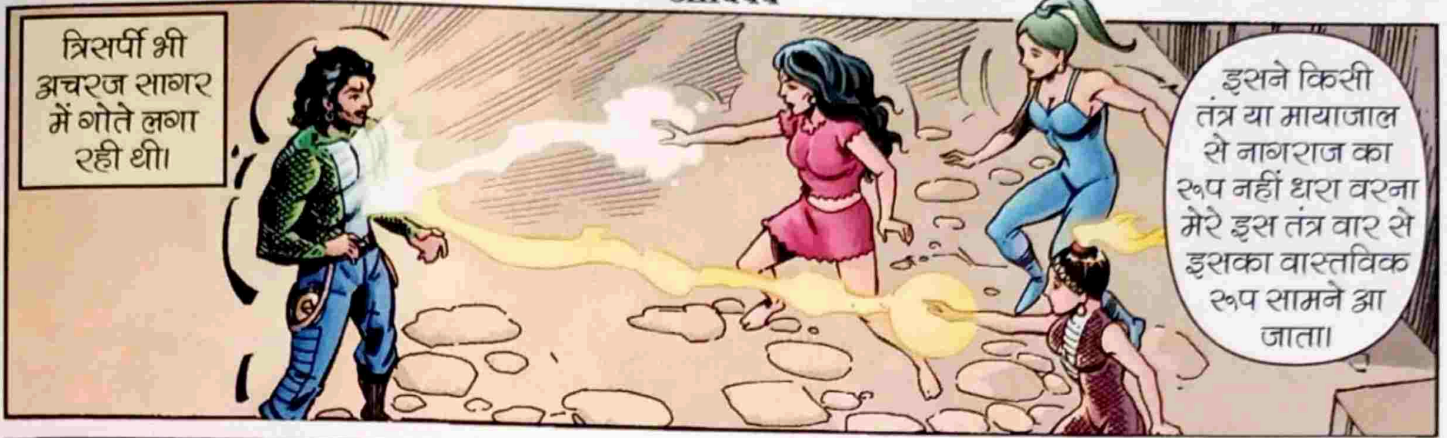
त्रिसर्पी भी अचरज सागर में गोते लगा रही थी।
इसने किसी तंत्र या मायाजाल से नागराज का रूप नहीं धरा वरना मेरे इस तंत्र वार से इसका वास्तविक रूप सामने आ जाता।

सिर्फ सूरत ही मिलती है, सीरत नागराज से बिलकुल विपरीत है।
आऊ! यह मेरी जिंदगी का प्रथम अवसर है जब तीन-तीन कमसिन, सौन्दर्य और यौवन से लबरेज नागिनें अपने कोमल वारों से मेरे तन और मन दोनों को गुदगुदा रही हैं।

दिलावर खान और उसके आदमी मौके का फायदा उठा कर पार्ट्स के साथ भाग निकले, पर फिलहाल इन बच्चों को इस नकली नागराज की पहुँच से दूर करना ज्यादा जरूरी है।
अब्दुल! बाकी बच्चों को लेकर फौरन निकलो यहां से।

लेकिन त्रिसर्पी अब स्वयं असुरक्षित थी।
ऐसे दूर-दूर से क्या दीदार करना, आओ जरा बाहों में... हाहाहा!!

जब तक उन्हें उस आतातायी की वास्तविक मंशा समझ आई देर हो चुकी थी।
उफ! यह क्या हो रहा है!
हम सर्प रूप में परिवर्तित होकर इसकी कलाइयों में प्रविष्ट हो रहे हैं।
हाऐ...ऐसी चिकनी-चिकनी, मक्खन मलाई जैसी नागिनों से कभी पाला नहीं पड़ा। जी करता है समूचा ही निगल जाऊं।
नागराज!
त्रिसर्पी को स्पर्श कर के तूने खुद अपने डेथ सर्टिफिकेट पर अंगूठा लगा दिया है।
फौरन मेरे जिस्म में समा जाओ, त्रिसर्पी।
उफ! यह प्रथम अवसर है जब नागराज के आदेश को पूरा किए बगैर ही वापस लौटना पड़ रहा है।
हाहाहा! क्या है ना जहरीले, मैं बन्दा बड़ा रोमेंटिक किस्म का हूं।
अपनी नागिनों को अपनी कलाइयों में चूड़ियों के जैसे सहेज के रखियो। कहीं मेरा मूड बन गया तो उम्र भर मेरे नाम को रोएंगी... इच्छाधारियों की उम्र वैसे भी लम्बी होती है।
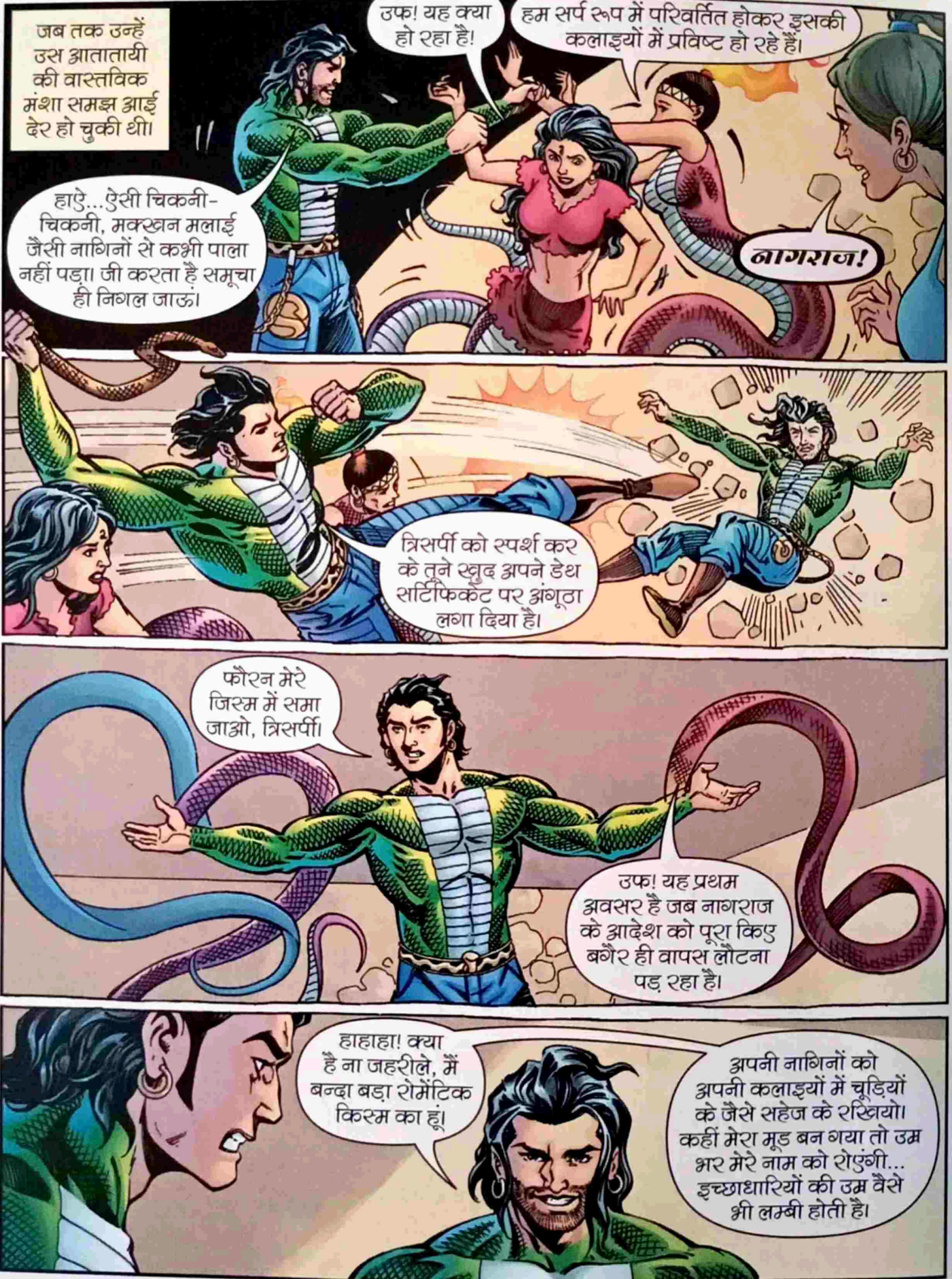
त्रिसर्पी के हुए अपमान की अग्नि नागराज के जिस्म के हर शल्क में धधक रही थी।
और यह प्रचंड अग्नि ज्वालामुखी के खौलते लावे के समान शत्रु पर फूटी।
आज मैं तुझे एक मूलभूत शिष्टाचार का सिद्धांत सिखाता हूं जिसे इस संसार के हर पुरुष को याद रखना चाहिए...
...लड़की हो या नागिन, संसार की किसी भी स्त्री को उसकी सहमती के बगैर हाथ मत लगाओ...
...क्योंकि ऐसा करने वालों के हाथ तोड़ देता है नागराज।
कड़ाक
ईयाााह!!

अब तुम्हें यह सबक पूरी उम्र याद रहेगा लेकिन अफसोस तुम्हारे किसी काम नहीं आएगा। अब तुम चाह कर भी किसी लड़की को हाथ नहीं लगा सकते।
इस पूरी घटना का सीधा प्रसारण दो अलग-अलग स्थानों पर हो रहा था। पहला, पापाध्यक्ष की पाप परिषद में जहां उपस्थित महाविभूतियों में फैला रोष स्पष्ट दिखाई और सुनाई दे रहा था।
हुंह! नागमणि का यह परमाणु बम तो बुझा पटाखा निकला।
दुनिया में नागराज वन पीस है, उसके जैसा दूसरा कोई नहीं हो सकता।

नागराज! मेरे पदच्युत पुत्र... बहुत गलतफहमी है दुनिया को तेरे वन पीस होने पर।

लोगों की तरह तू भी भूल गया है कि बेटा कितना भी फन्ने खां क्यों ना हो जाए...

मैं कोई शोले का ठाकुर नहीं हूं जहरीले, जिसके हाथ काट के तू खुशियाँ मना लेगा।

लड़कियों का पता नहीं, पर तुझे हाथ लगाने के लिए मुझे सहमति की जरूरत नहीं!

दोबारा बिन मांगे ज्ञान झाड़ने की कोशिश की...

जानता है यह क्या है? यह इच्छाधारी नागों के देवता की केंचुली की भस्म है।

इसे चिलम में भरो और एक लम्बा कश खींचो।

दम मारो दम... दुनिया से हो जाए नागराज कम।

जानता है यह क्या है...यह इच्छाधारी नागों के देवता का विष है। इसका एक तगड़ा घूँट भरो...

...इसके बाद तो सामने खड़ा नागराज भी मूषकराज के समान है।

इससे पहले नागराज ने कभी खुद को इतना असहाय महसूस नहीं किया था।
यह मुकाबला अब पूर्णतः एकतरफा था।
नागराज का ऐसा कोई वार नहीं था जिसके बारे में उसका प्रतिद्वंद्वी पहले से ना जानता हो।
और प्रतिद्वंद्वी का ऐसा कोई वार नहीं था जिसके बारे में नागराज को लेशमात्र भी अंदेशा हो।
जानते हो, नागराज! तुम अपनी मौलिक प्रकृतिदत्त शक्तियों को साधने के बजाए अत्यंत दोयम दर्जे की शक्तियों को खुद में ठूंसने में जुटे रहे।
जबकि मैंने उन्हीं मौलिक शक्तियों को उनकी पराकाष्ठा तक साध लिया है।
योद्धा वह सर्वश्रेष्ठ नहीं जिसकी तरकश में सैकड़ों तीर ठुंसे पड़े हों। योद्धा वह सर्वश्रेष्ठ होता है जिसकी तरकश का एक मात्र तीर भी ब्रह्मास्त्र की भांति हो।
यह तो एक ही झटके में मेरी गर्दन सूखे तिनके के समान तोड़ देगा
मुझे इच्छाधारी कणों में बदल कर इसकी कैद से खुद को स्वतंत्र कराना होगा।

मेरा ब्रह्मास्त्र चल चुका है जहरीले!
मेरा सारा अस्तित्व इसमें विलीन हो रहा है। नहीं!!!!
हाहाहा!
हे बाबा गोरखनाथ! मेरे इच्छाधारी कण इसके शरीर में समाहित हो रहे हैं और मैं अपना सम्पूर्ण बल लगाकर भी खुद को रोक नहीं पा रहा।
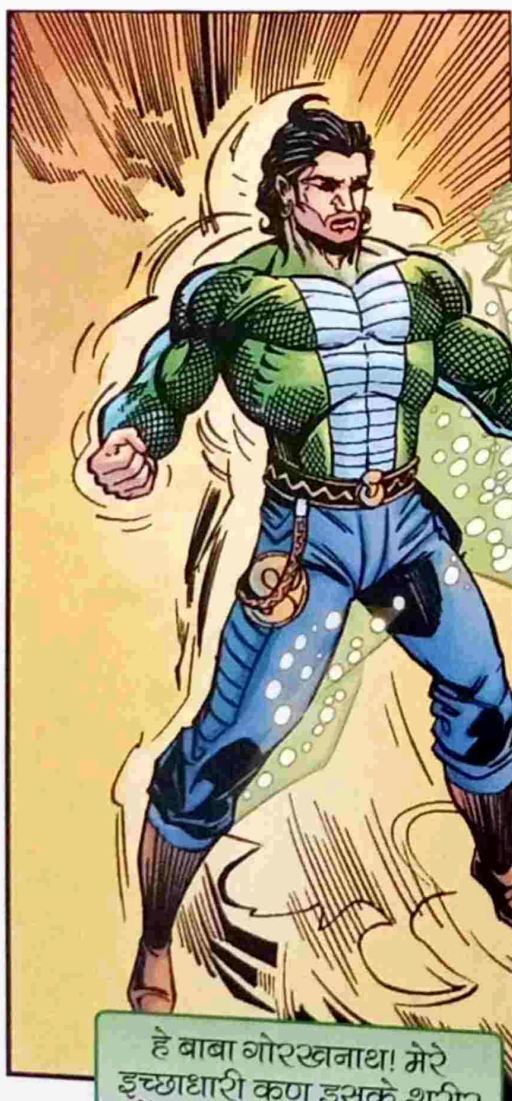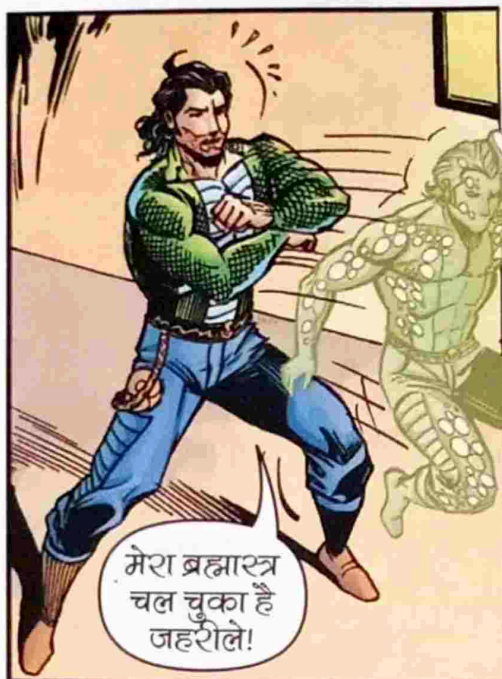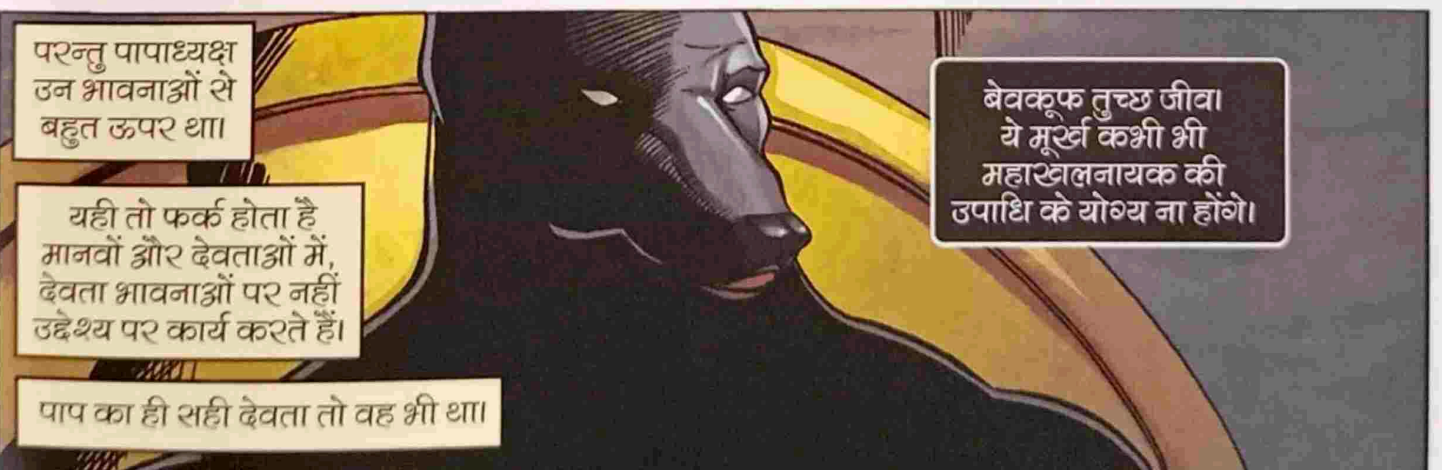
पापाध्यक्ष और पाप परिषद के विषय में विस्तार से जानने के लिए पढ़ें नरक नाशक नागराज की पूर्व प्रकाशित कॉमिक्स मकबरा, तक्षक व नरक नाशक नागराज उत्पत्ति श्रृंखला।

परन्तु प्रोफेसर नागमणि और उसके रहस्यमयी पुत्र ने हमें वाकई प्रभावित किया है।

इन दोनों का हर कदम हमें हमारे उद्देश्य के और निकट ला रहा है।

यहां तो सभी मोहरे अपेक्षा अनुरूप चाल चल रहे हैं, उम्मीद है हमारा दूसरा प्यादा भी कामयाब होकर लौटेगा।

परन्तु हमें काफी समय से उसी ऊर्जा की अवस्थिति नहीं मिल रही...

...आखिर तूतेन-तू है किस आयाम में?

मैं कहां हूं?

तुतेनतू के विषय में विस्तार से जानने के लिए पढ़ें नरक नाशक नागराज उत्पत्ति श्रृंखला।

नरहरी के विषय में विस्तार से जानने के लिए पढ़ें नरक नाशक नागराज, दनादन डोगा और क्रोधकेतू कोबी का कॉमिक्स 'अभिशप्त'।

...सिवाय हमारे कोबी सर के।
हाय!!! दर्द नहीं होता पर दिन में तारे तो दिखते हैं।
तुम्हारी इन हरकतों से मैं मुंह नहीं खोलने वाला। भाड़ में जाओ तुम सब।
जैसा कि मैंने कहा, तुम्हे मुंह खोलने की कोई जरूरत नहीं है।
माइंडरोवर, इसका माइंडस्कैन करो।
ओके नरहरी सर।
य...यह... क्या कर रहा है लड़के!!
इसकी उंगलियाँ मुझे मेरे भेजे के अंदर घुसती महसूस हो रही हैं।
माइंडरोवर का मस्तिष्क तूतन-तू के मस्तिष्क से जुड़ गया था और उसकी सभी स्मृतियाँ और विचार दो कंप्यूटर डिवाइसेस के बीच ट्रान्सफर होते डेटा की तरह माइंडरोवर के दिमाग में भर रहे थे।
आह!!...छोड़ मुझे चितकबरे पिल्ले!!
ओह...ओह ...ओह।
दर्द के एहसास से परे होने के बावजूद, अपने मस्तिष्क में घुसती दसों उँगलियों का एहसास तूतन-तू के लिए असहनीय था।
आाहहह!

तूतेन-तू का दिमाग एक बार फिर बेहोशी के गहरे अन्धकार में डूब गया।
इसके दिमाग से क्या जानकारी मिली, माइंडरोवर?
शुरू से शुरू करो।
समझ नहीं आ रहा कहां से शुरू करूं।
माइंडरोवर ने कोबी और नरहरी को जो कुछ भी बताया उसे सुनकर उनके दिमाग में फुलझड़ियाँ छूटने लगी।
मामला बहुत गंभीर है, कोबी। अँधेरी दुनिया का खुदा अनूबिस नागराज के अस्तित्व के पीछे पड़ा है।
उसका ये हिमायती विषंधर को तलाशता इस आयाम तक आ गया है। यह सब कुछ आने वाले बहुत बड़े खतरे का संकेत है।
इस आने वाले खतरे का आभास तो हम दोनों को पहले से ही था, नरहरी।
पिछले दो वर्षों से हम इसी समय की तैयारी में जुटे हुए थे।
लेकिन अफसोस तैयारी पूर्ण नहीं हो पायी। तुमने इन बच्चों को अच्छी तरह प्रशिक्षित किया है कोबी लेकिन यह अभी युद्ध के लिए तैयार नहीं हैं।
जानता हूं नरहरी। पर कोई दूसरा रास्ता नहीं है। इस आधे गंजे को होश में मत आने देना वरना यह आयाम उस काले सियार अनूबिस से छुपा नहीं रहेगा।
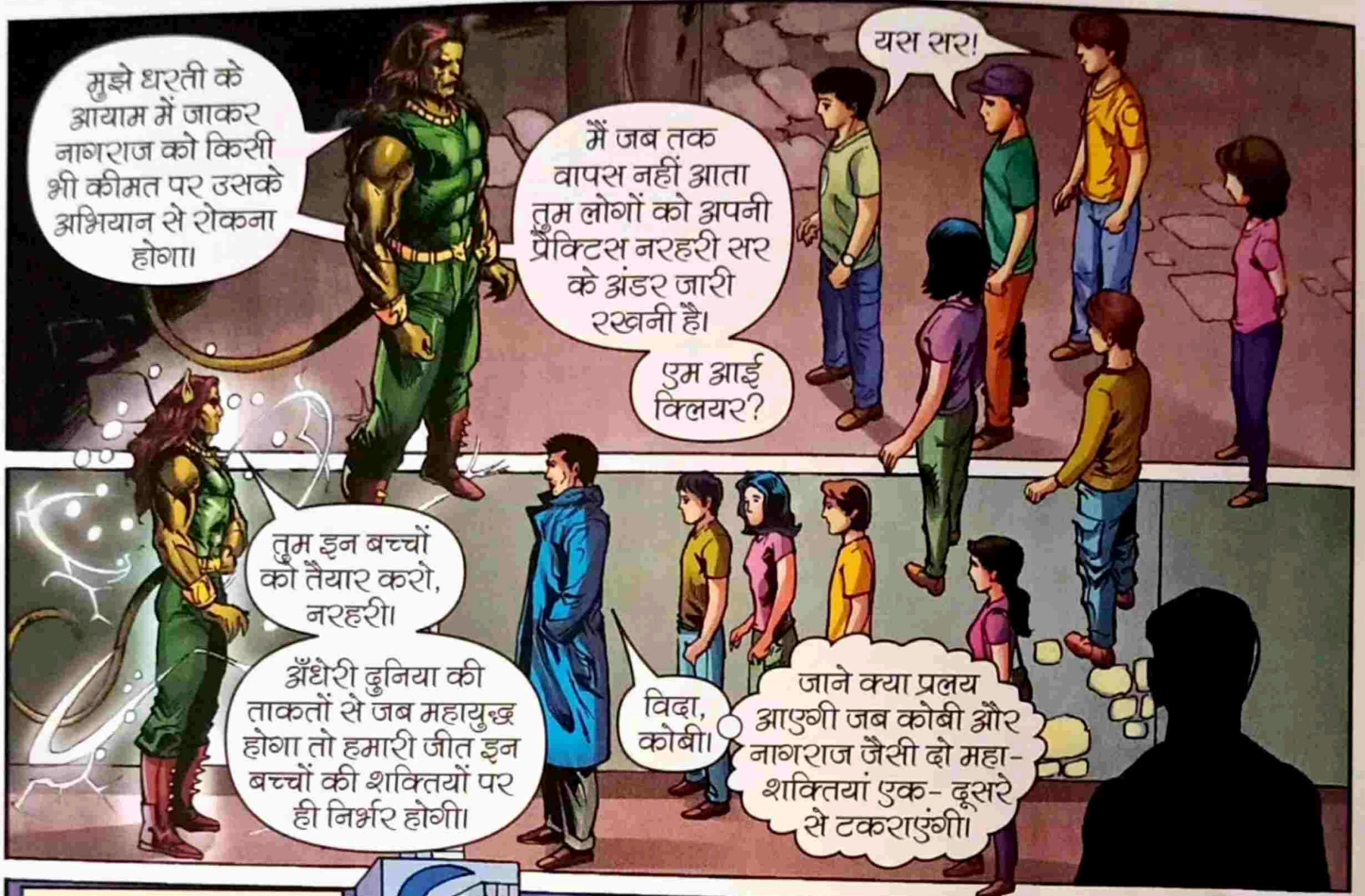
इन छः पात्रों के विषय में विस्तार से जानने के लिए पढ़ें नरक नाशक नागराज उत्पत्ति श्रृंखला।

उम्र का प्रभाव कालदूत की घटती बौद्धिक क्षमता पर साफ दिख रहा है। उसे यह समझ नहीं आ रहा कि उसकी यह जिद इच्छाधारी नागजाति को कितनी महंगी पड़ेगी।
अपने न्यूज चैनल के जरिए मैंने हमेशा नागराज की भर्त्सना की है। सिर्फ नागराज ही क्यों, मैंने मुम्बई के सो कॉल्ड रक्षक डोगा की धज्जियाँ उड़ाने में भी कोई कसर नहीं छोड़ी। यह तो अच्छा है कि वास्तविक दुनिया में सिर्फ यही दो सुपर हीरो मौजूद है...।

...बाकी सिर्फ कॉमिक बुक्स के काल्पनिक पात्र हैं, वर्ना हमारा काम और मुश्किल हो जाता। इस दुनिया में इच्छाधारी नागों का अस्तित्व गुप्त रहे और इंसान और इच्छाधारी नाग पारस्परिक सहयोग से साथ रह सकें उसके लिए जरूरी है कि संसार में महानायक ना हो...
और जो हों वह संसार द्वारा तिरस्कृत हों। लोग उन्हें रक्षक के रूप में नहीं बल्कि मानवता के लिए एक बिमारी के रूप में देखें।

तुम्हारा न्यूज चैनल देखने वाले लाखों करोड़ो लोग उस झूठ को सच मानते हैं जो तुम उन्हें अपने चैनल के जरिए परोसती हो।
और यकीनन तुम इसमें काफी हद तक सफल रही हो।
एक्सक्यूज मी, मैडम भारती! बनारस शहर से हमारे संवाददाता की रिपोर्ट आ रही है कि नागराज ने आतंकवादियों का एक खुफिया अड्डा ध्वस्त कर दिया है।
यह आतंकी आणविक बम असेम्बल कर के बड़ी वारदात को अंजाम देने की तैयारी में थे और...
निशा! निशा... तुम जानती हो हम ऐसी न्यूज नहीं दिखाते। आज रात के प्राइम टाइम की कैचलाइन होगी... 'पवित्र रक्षक या पाखंडी?'
लोगों की भावनाओं से खेलो। न्यूज को पॉलिटिकल और कम्यूनल एंगल दो।

तुम वाकई अच्छा काम कर रही हो मैडम भारती।

मांत्रिक इच्छाधारी नाग जाति सदैव तुम्हारी आभारी रहेगी।

मैं सिर्फ अपने कर्तव्य और अपने दादा जी की अंतिम इच्छा का पालन कर रही हूं।

हमारे लिए क्या आदेश है?

सिर्फ एक... किसी भी कीमत पर नागराज को उसके अस्तित्व अन्वेषण अभियान से रोको।

महात्मा कालदूत द्वारा दिए गए शिव-लिंग की स्थापना जिस विशिष्ट मन्दिर में होगी उसकी खोज में वाराणसी आने के पीछे एक बहुत बड़ा उद्देश्य यह था कि काशी महादेव की नगरी है और महादेव इच्छाधारियों के अराध्य हैं।

संसार की इस सबसे पुरातन नगरी में हजारों सालों से इच्छाधारी नाग मानवों के बीच मानवों के रूप में रह रहे हैं।

इच्छाधारी नागों के अस्तित्व, उनके इतिहास का ऐसा कोई रहस्य नहीं जो इन इच्छाधारी नागों को ना पता हो।

मुझे ऐसे ही इच्छाधारी नागों से संपर्क साधना होगा। वे ही हमारी सहायता कर सकते हैं उस मंदिर तक पहुँचने में।

तू अपना समय व्यर्थ कर रही है नागिन। यहां कोई भी इच्छाधारी तेरी सहायता नहीं कर पाएगा।

तू जिस इतिहास को ढूंढ रही है उसे समय के पन्नों से सदा के लिए मिटा दिया गया है।

ओह यह तो इच्छाधारी है।

इस संसार में सिर्फ एक ही शक्ति है जो आदिकाल से अब तक है...

जिसने सारे संसार और सभी सभ्यताओं का इतिहास देखा है...

तुम्हारी सहायता सिर्फ वह महाप्रेत ही कर सकता है

महाप्रेत? कौन है यह महाप्रेत? कहां मिलेगा?

उस महाप्रेत तक पहुँचने के लिए तुम्हें अपने जीव को जिस्म से अलग करना होगा।

देह त्याग कर हमारे जीव पलक झपकते ही हजारों कोस दूर की यात्रा कर सकते हैं।
यह तो राजनगर और रूपनगर शहरों की बाहरी सीमा है।
SUPER CIRCUS
यह तो रूप नगर कब्रिस्तान है, मैं यहां कई भटकती रूहों को देख सकती हूं।
ये रूहें हमारे किसी काम की नहीं।
इस कब्रिस्तान से कुछ दूर एक पुराना पीपल का पेड़ है...
कां कां
...उस सूखे पीपल पर एक कौवा हमेशा कर्कश आवाज में कौंकता रहता है। उस पीपल पर उल्टा लटका है वह महाप्रेत अंतहीन।

अंतहीन! जो अनंत है। जो महाप्रेत है। जिसने देव, दानव, दैत्य, मानव, यक्ष, किन्नर, गंधर्व, इच्छाधारी नाग सभी सभ्यताओं को अपनी आंखों के सामने जन्म लेते और समृद्ध होते देखा है।
कां कां
यह महाप्रेत धरती पर जीवन और सभ्यताओं का बहीखाता है। तेरी उलझन अगर कोई सुलझा सकता है तो सिर्फ यह महाप्रेत।

तो फिर देर किस बात की है, अभी इस महाप्रेत से मैं उस मन्दिर का पता पूछ लेती हूँ जहां इच्छाधारी नागों का वह विशेष शिवलिंग स्थापित था।
नहीं नागिन रुक जा, ऐसा मत करना...
क्रां क्रां

अगले ही पल नगीना की आत्मा को नरक की असहनीय ठंडी आग की प्रचंडता का अनुभव हुआ।
वह ठंडी आग उसे जला नहीं रही थी बल्कि असहनीय यातना दे रही थी।
...महाप्रेत किसी भी शरीर या अशरीर शक्ति के कब्जे में नहीं आ सकता।

उस प्रताड़ना को सहन कर पाना नगीना के वश की बात नहीं थी। उसकी समाधि भंग हो गई। अगले ही पल उसकी आत्मा वापस अपने शरीर में समा चुकी थी।
मैंने तुझे चेताने की कोशिश की थी नागिन।
हूफ!! इतनी भयंकर महाशक्ति!
तेरी अधीरता तेरे पतन का कारण बनेगी नागिन। धीरता नारी का आभूषण है, इसका तिरस्कार ना कर।
तेरे सभी प्रश्नों के उत्तर तुझे महाप्रेत से प्राप्त होंगे परन्तु महाप्रेत को वश में करने के लिए तुझे महानायक की आवश्यकता पड़ेगी...
अपने तक्षक को तैयार कर। भोले भला करेंगे...
अलख निरंजन!
नगीना के होश संभालने तक औघड़ हवा हो चुका था।
वह औघड़ कहाँ गायब हो गया?
वह कोई आम इच्छाधारी नाग नहीं था।
कौन था वह?
खैर, अब नागराज को ढूँढना पड़ेगा।

दिलावर खान के अड्डे से निकलते नागदंत की चाल और तेवर एक अलग ही अकड़ से भरे हुए थे।
तभी उसके कानो में गूंजी उसके पिता प्रोफेसर कौटिल्य नागमणि की आवाज!
नटखट कहीं का! वापस आ जा, आगे की प्लानिंग करनी है लेकिन उससे पहले अपने जिगर के टुकड़े को सीने से लगाना है।
आखिर इस सीने में वर्षों से धधक रही प्रतिशोध की अग्नि को तूने अपनी विष फुहार से ठंडा किया है मेरे बच्चे।
आई एम ए प्राउड फादर टुडे! मे डेविल ब्लेस यू माय सन।
जिसके पास आप जैसा पिता हो उसे डेविल की ब्लेसिंग की क्या जरूरत डैडी।
आपके पास ही आ रहा हूं!
अलख निरंजन बच्चा!!! भोले भला करेंगे!
?!
इस संकरी गली में आने-जाने का यही एक रास्ता है।
यह औघड़ बिना मेरी नजर पड़े मेरे पीछे कैसे आ गया?
खैर, मुझे क्या! मुझे तो डैडी के पास पहुंचना है।
यह भोले की नगरी है बच्चा... बाबा का प्रसाद लेता जा।
उफ! इसके चिलम से उठती तीव्र गंध!
यह तो...यह तो... किसी अत्यंत घातक विष की गंध है।

वैधानिक चेतावनी– नायक हो या खलनायक चिलम फूंकना जानलेवा है।

नहीं! नहीं...पिछली बार जब ऐसा हुआ था मैंने अपने बेटे को हमेशा के लिए खो दिया था।

उस रहस्यमय सन्यासी बुड्ढे ने मेरे राज के मस्तिष्क से रोपित चिप निकाल कर उसे मेरे खिलाफ कर दिया था...

नाग का काटा कभी उसका दंश नहीं भूलता।

उस दंश का जहर खौफ की टीस बनकर लहरता है।

कहीं मेरे जीवन का कालसर्प दोष मेरे इस बेटे को भी मेरे खिलाफ तो ना कर देगा?
ऐसा कभी नहीं होगा डैडी।
इन रगों में इस संसार के सबसे घातक विष के साथ-साथ आपका खून भी दौड़ रहा है।...
...खून, खून से गद्दारी नहीं करता।
नागदंत! मेरे बेटे!!
कहाँ था तू?
कम्यूनिकेशन डिवाइस बंद कैसे हो गई थी...
...और तू इस तरह लड़खड़ा क्यों रहा है?
व...वह डैडी मुझे एक औघड़ मिल गया था।
उसकी चिलम में कोई भयानक विष था। चिलम खींचते ही मैं अपने होश खो बैठा।
फिर जैसे ही मुझे होश आया मैं आपके पास आ गया।
नागमणि के माथे पर चिंता की रेखाएं सांप के समान लहराने लगीं।
ऐसा कैसे हो सकता है बेटा? तेरी रगों में संसार का सबसे घातक जहर दौड़ रहा है, भला साधारण चरस-गांजे से तुझे नशा कैसे हो सकता है?
नहीं डैडी, उस औघड़ की चिलम में साधारण गांजा नहीं बल्कि कोई बहुत ही घातक विष था।
मुझे लगता है वह मेरे जहरीले भाई का कोई दुश्मन था...
हम्म...हो न हो वह औघड़ कोई इच्छाधारी नाग था बेटे।
यकीनन उसने ही अपनी मायावी शक्तियों से ट्रांसमिशन डिवाइस निष्क्रीय कर दी होगी।

...जो मुझे नागराज समझ कर मारने की कोशिश कर रहा था।

नहीं, बेटे।

नागराज का हर एक दुश्मन जानता है कि दुनिया का कोई भी जहर नागराज की जान नहीं ले सकता।

यकीनन उस मायावी औघड़ का नागव्यूह से कोई न कोई सम्बन्ध था।

नागव्यूह के बारे में सुनकर बुरी तरह चौंका जहरीला।

नागव्यूह!?

एक तो मैं तेरी नशे की लत से परेशान हूँ। ये जहर के नशे की लत तेरी हार और मेरी बर्बादी का सबब बन सकती है बेटे।

मेरी बात सुन मेरे बच्चे, नागराज के अस्तित्व को अपने आप में विलीन कर के तूने अभी सिर्फ आधी लड़ाई जीती है।

एक बार फिर कौटिल्य नागमणि के कुटिल दिमाग के तर्क पर बेटे के लिए तड़पते बाप के दिल का शोर भारी पड़ गया।

हमारा उद्देश्य नागव्यूह है। नागव्यूह तोड़ कर ही हम महायुद्ध जीत सकते हैं।

तुम्हारे पास वह शिवलिंग तो है न जो उस बुड्ढे इच्छाधारी ने नागराज को सौंपा था?

काशी की पुरातन नगरी, जिसके कोतवाल हैं महादेव शिव के रौद्र रूप कालभैरव।

काशी के कालभैरव मंदिर में दर्शन के लिए प्रतिदिन देश-विदेश से आए सैकड़ों श्रद्धालुओं का तांता लगा रहता है।
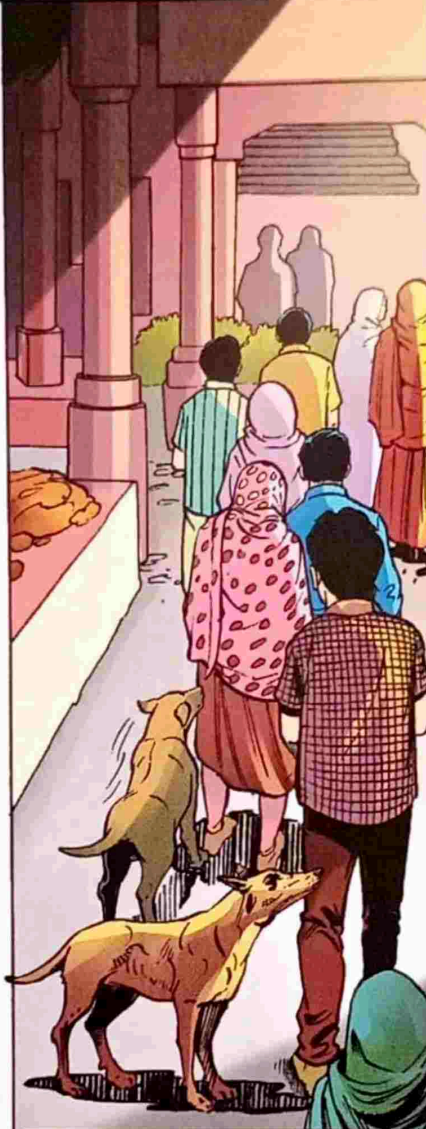
बाबा काल भैरव का वाहन हैं श्वान। मंदिर के आस-पास सैकड़ों कुत्ते हर समय मौजूद होते हैं। अपने स्वामी की भांति ही यह कुत्ते भी स्वामिभक्त रखवाले हैं...।

...क्योंकि कुत्ता सूरत नहीं सीरत पढ़ना जानता है।
खेल बिगड़ गया!!
तू जो कोई भी है अब कुत्ते की मौत मरेगा।
जिंग जिंग
जिंग जिंग
इतनी गोलियां डकार कर भी खड़ा हुआ है आखिर तू है कौन?
गौर से देख इस सूरत को। कुत्ते से मिलती है ना...
डोगा!! यह तो डोगा है!
या मालिक! पहले नागराज, फिर डोगा!! लगता है जन्नत की बहत्तर हूरें नसीब में ही नहीं हैं।

अभी तो वह हाल होना बाकी है जिसके बाद हूरें मिल भी जाएंगी तो कुछ करने लायक नहीं रहोगे।
जिंग जिंग
तेरी नाजायज औलादें तो निकल गईं जहन्नुम की राह पर।
इससे पहले कि तेरी सवारी भी उधर ही मोड़ दूं सूअर की तरह रेंकना शुरू कर कि क्या प्लानिंग है तुम्हारी और किसकी शह पर कर रहे हो यह सब।
तेरे सवालों के जवाब तुझे ये धमाके देंगे काफिर कुत्ते!
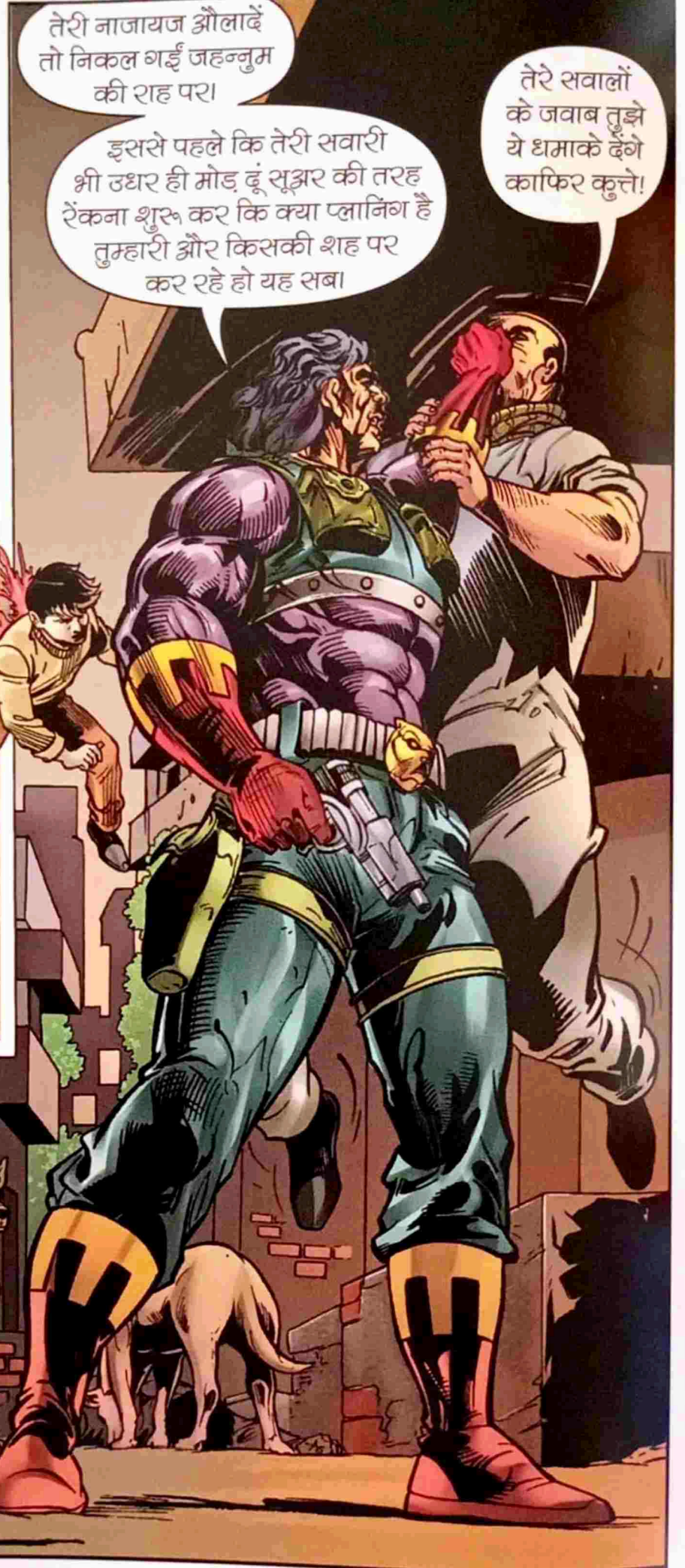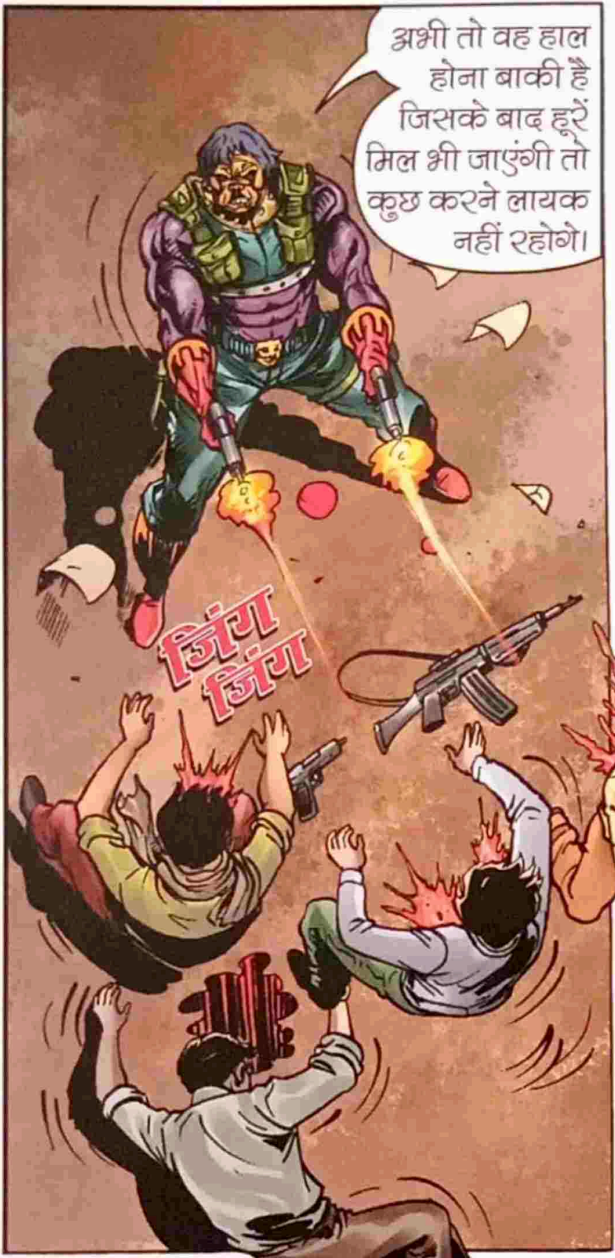
एक के बाद एक हुए लगातार धमाकों से डोगा को संभलने का मौका नहीं मिला।
धड़ाम
ह्मफ्फ... सब लोग गली से बाहर निकलो... फौरन!!
असली प्लानिंग तो कुछ और थी जो तूने बर्बाद कर दी, कुत्ते... जिसके लिए अब तुझे कुत्ते की ही मौत नसीब होगी।
ओह! मेरी श्वान तंत्रा मुझे तीव्र खतरे के संकेत दे रही है।
मन्दिर में घुसने से पहले यह फूलों की दूकान वाले लोगों का सामान जैसे मोबाइल वगेरह जमा करवा लेते हैं।
...और मेरे नथुने बहुत अधिक मात्रा में घातक विस्फोटकों की गंध पा रहे हैं...
हमने मोबाइल फोंस में बम प्लांट किए थे...
लेकिन यह तो बस ट्रेलर के लिए था।
...ओह! इन हरामजादों ने अपने जिस्म के अन्दर शक्तिशाली विस्फोटक प्लांट किए हुए हैं।
डोगा को कुछ कर पाने का मौका नहीं मिला। अगले ही पल भीषण विस्फोट हुए।
दिलावर अपने साथ इन मरे आतंकियों के बम भी एक्टिवेट कर रहा है।
इतना भीषण धमाका मन्दिर प्रांगण को निश्चित रूप से क्षति पहुंचाएगा और साम्प्रदायिक हिंसा का कारण बनेगा।
गुर्र
वुफ्फ
वुफ्फ

डोगा को अपनी आंखों पर विश्वास नहीं हो रहा था।
नागराज!
तुम्हारे साँपों ने इतने भीषण विस्फोट अपने अंदर कैसे समेट लिए?
महादेव की नगरी में उनके परम भक्त के रहते भला शैतान अपने कुत्सित इरादों में कैसे सफल हो जाएंगे।
क्योंकि ये साधारण सांप नहीं हैं डोगा। ये प्रस्तर सर्प हैं, इनके शल्क पत्थर की तरह सख्त होते हैं।
बस अफसोस यह है कि मेरे शरीर में प्रस्तर सर्प सीमित मात्रा में ही थे और ये सभी इन विस्फोटों को नाकाम करने में मारे गए।
एक भीषण बीमारी से ग्रस्त इन सर्पों का जीवन बहुत लम्बा नहीं होता है।

लेकिन तुम यहाँ काशी में कैसे आ पहुंचे डोगा?

मैं आया तो किसी व्यक्तिगत कारण से था मित्र लेकिन किस्मत में इन आतंकियों का रास्ता काटना लिखा था।

मैं नहीं चाहता नागराज कि तुम जानो कि कुत्ते के इस चेहरे के पीछे छुपा सूरज म्यूटेशन के ग्रहण से अस्त होने की कगार पर है।

"यह सिलसिला कुछ दिनों पहले शुरू हुआ जब मुंबई में किसी अनजान सीरियल किलर का आतंक मचा हुआ था।"

देख रहे हो डोगा, फुटपाथ पर सोते इंसान की जिंदगी की कीमत नाली में रेंगते कीड़ों जितनी भी नहीं है।

कभी कोई फिल्म वाला गाड़ी से कुचल जाता है तो कभी कोई पागल हत्यारा मार जाता है।

ओह! फिर से हत्यारे ने फुटपाथ पर सोते एक गरीब का सर कुचल दिया है।

लाश के पास फूटा नारियल, जलती धूप, अक्षत, सिन्दूर ये सभी चीजें पिछले दिनों हुई ऐसी ही पांच अन्य हत्याओं में लाश के पास पाई गई थीं।

हत्यारा इसे मिलाकर अब तक छः भिखारियों की जानें ले चुका है, हो ना हो हत्यारा जरूर किसी तंत्र साधना के लिए यह हत्याएं कर रहा है।

इस पूजन सामग्री की गंध अति तीव्र है और ऐसी ही गंध मुझे कुछ दूर से आती महसूस हो रही है यानी हत्यारा आस-पास ही है।

लेकिन इस बार वो हत्यारा डोगा के हाथों से बच कर निकल नहीं पाएगा।

मेरी म्यूटेंसी मेरे लिए सबसे बड़ा अभिशाप है तो कुछ हद तक वरदान भी है।

इस म्यूटेशन ने मेरी सुनने की शक्ति, सूंघने की क्षमता, मेरी खतरा भांपने की इन्द्रियां कुत्ते जैसी ही तीव्र कर दी हैं।

वह रहा हत्यारा।

इसके पास भाग निकलने का भरपूर मौका था फिर भी यह यहाँ मेरे आने के इंतजार में बैठा रहा।

इसमें जरूर इसकी कोई चाल है।

म्यूटेशन के कारण सिर्फ मेरी इन्द्रियाँ ही नहीं, मेरी दौड़ने की क्षमता भी किसी शिकारी कुत्ते के समान तेज हो गई है।

ओपक!

फचाक
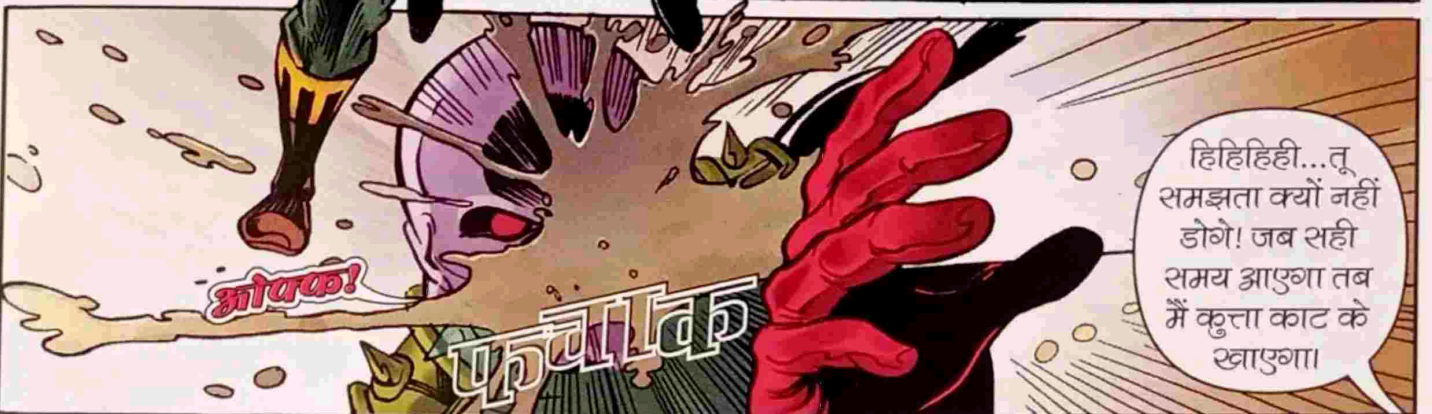
हिहिहिही...तू समझता क्यों नहीं डोगे! जब सही समय आएगा तब मैं कुत्ता काट के खाएगा।

"जाने क्या था वह तरल पदार्थ जो मेरे एसिड प्रूफ मास्क को भी गलाने लगा।"

"म्यूटेशन का यह भी फायदा था कि मेरी असली सूरत देखकर भी कोई मुझे पहचान नहीं सकता था।"

"आखिर करना क्या चाहता था वो शख्स? कौन था जो मुझे डोगे बुला रहा था?"

जब मेरा मन आएगा, तब मैं कुत्ता काट के खाएगा।

"उसने फुर्ति से मेरे मस्तक पर टीका लगा कर गले में फूलमाला पहना दी।"

"कौन था वह जो इस तरह पहेलियाँ बुझा रहा था? उसने न जाने कैसी भभूत मेरे चेहरे पर उड़ाई..."
ओफ्फ!

"...कुछ पलों के लिए उस भभूत ने मेरा म्यूटेशन ठीक कर दिया।"
"मेरा चेहरा वापस सामान्य हो गया। आंखों में भभूत के कारण कुछ भी ढंग से नजर नहीं आ रहा था।"

अभी वह समय नहीं आया है डोगे जब तू और मैं आमने-सामने हों।
मुझ तक पहुंचना चाहता है तो वहाँ आना जहां कुत्ता रखवाले से सवारी बन जाता है।

वह मुझे उस तक पहुँचने का क्लू देकर गया था।
दुनिया में सिर्फ एक ही जगह ऐसी है जहां कुत्ता रक्षक से वाहन बन जाता है, काशी! जहाँ के कोतवाल काल भैरव का वाहन कुत्ता है।
किस सोच में डूब गए डोगा?
यही सोच रहा हूँ नागराज कि यह इत्तेफाक है या कोई सोची-समझी साजिश जो मुझे यहाँ तक खींच लाई है।

कारण यकीनन बहुत बड़ा है होगा।
इन आतंकियों से कुछ समय पहले भी मेरा सामना हुआ था उस समय बदकिस्मती से यह मेरे हाथ से बच निकले।
इनके पीछे जो भी मास्टरमाइंड है मैं जल्द ही उसे ढूंढ निकालूँगा।
ठीक है मित्र, तुम अपने तरीके से कोशिश करो... मैं अपने तरीके से करता हूँ।
चुपक चुपक
पाप परिषद् में असमंजस का माहौल था।
यह नागमणि का हथियार तो नागराज को निगल कर खुद नागराज बन बैठा।
यह क्या हो रहा है, यह मजाक चल रहा है यहाँ।
लगता है हम लोगों ने खुशियाँ कुछ जल्दी मना लीं।
बताओ भला, अच्छे खासे आतंकी हमले की ऐसी-तैसी कर दी।
हम आप लोगों की आशंकाओं को समझ सकते हैं परन्तु निश्चिन्त रहें, नागमणि का हथियार मानवता के विरुद्ध ही चलेगा मानवता के लिए नहीं।
एक विशेष उद्देश्य की पूर्ति के लिए फिलहाल नागमणि का हथियार दुनिया के सामने नागराज होने का ढोंग रच रहा है।
उस ढोंग का उद्देश्य और परिणाम बहुत जल्द हमारे सामने होंगे। तभी यह निर्धारित किया जा सकेगा कि नागमणि का कौन सा पुत्र किस पुत्र की जान लेता है।

अभी ध्यान रखने वाली बात यह है कि नागमणि के हथियार ने नागराज को सिर्फ परास्त किया है, खत्म नहीं किया।
जब तक मौजूदा घटनाक्रम किसी नतीजे पर नहीं पहुँचता तब तक यह निर्धारित नहीं किया जा सकता कि अंतिम परिणाम क्या होगा।
इसलिए तब तक इस पाप सभा की गरिमा को बनाए रखना आप सभी का दायित्व है।
हमने नागराज की उत्पत्ति कथा तो उसके निर्माता श्रीमान कौटिल्य नागमणि से सुन ली।
परन्तु नरक नाशक से नागराज बनने का उसका सफर विश्व आतंकवाद के आप जैसे दिग्गजों के रास्ते काटते हुए बढ़ा है।
अब समय आ गया है कि संसार उस गाथा से भी परिचित हो।
विश्व आतंकवाद के खात्मे पर निकले नरक नाशक नागराज के प्रथम पड़ाव की दास्ताँ सुनाने के लिए अब मैं स्टेज पर आमंत्रित करूँगा तंजानिया अफ्रीका के जंगलों के बेताज बादशाह सम्राट थोडांगा को।

दोस्तों, मुझसे पहले नागराज के निर्माता कौटिल्य नागमणि ने अपना दावा पेश किया कि क्यों नागराज की जान पर उसका अधिकार है।
अब मैं आप सबके सामने वह हैरतंगेज दावा पेश करने वाला हूँ जो आप सबके होश उड़ा देगा।
लेकिन इस दावे को पेश करने के लिए मुझे भी नागमणि की तरह ही अतीत के पन्नों को खोलकर आपके समक्ष रखना होगा...
"...अतीत के पन्ने जो उतने ही काले और अन्धकार से भरे हुए हैं जितने तंजानिया के वे जंगल जहाँ का थोडांगा बेताज बादशाह है।
"अफ्रीका के खूंखार नरभक्षी जंगली आदिवासी कबीले जिनका काला जादू सभ्य समाज के लिए आज भी एक किंवदंती है।"

"उन सभी कबीलों का मैं देवता था। अफ्रीकी काले जादू का देवता थोडांगा।"

सम्राट थोडांगा की जय...
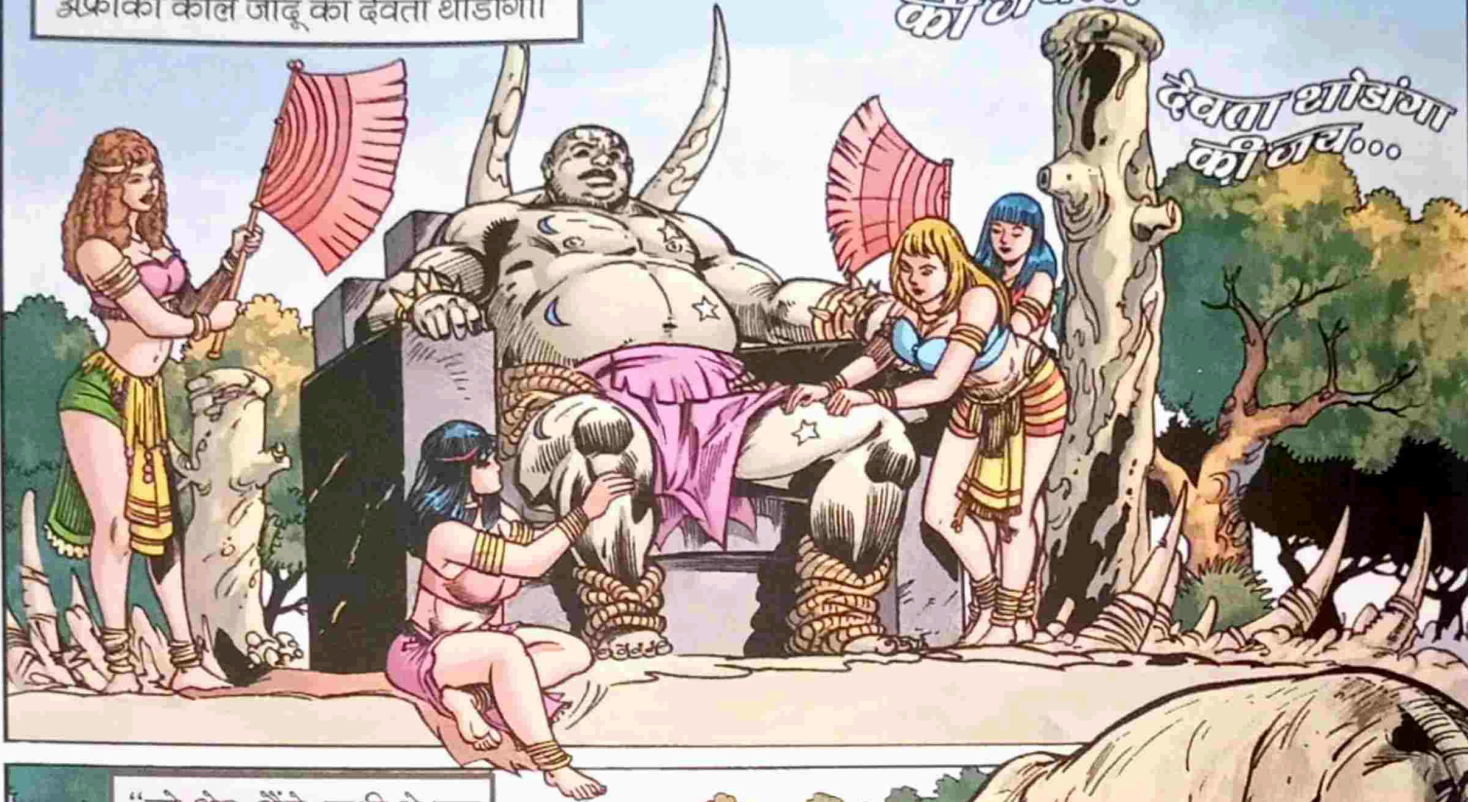
देवता थोडांगा की जय...

"जो शेर, गैंडे, हाथी से एक साथ कुश्ती लड़ता था।"
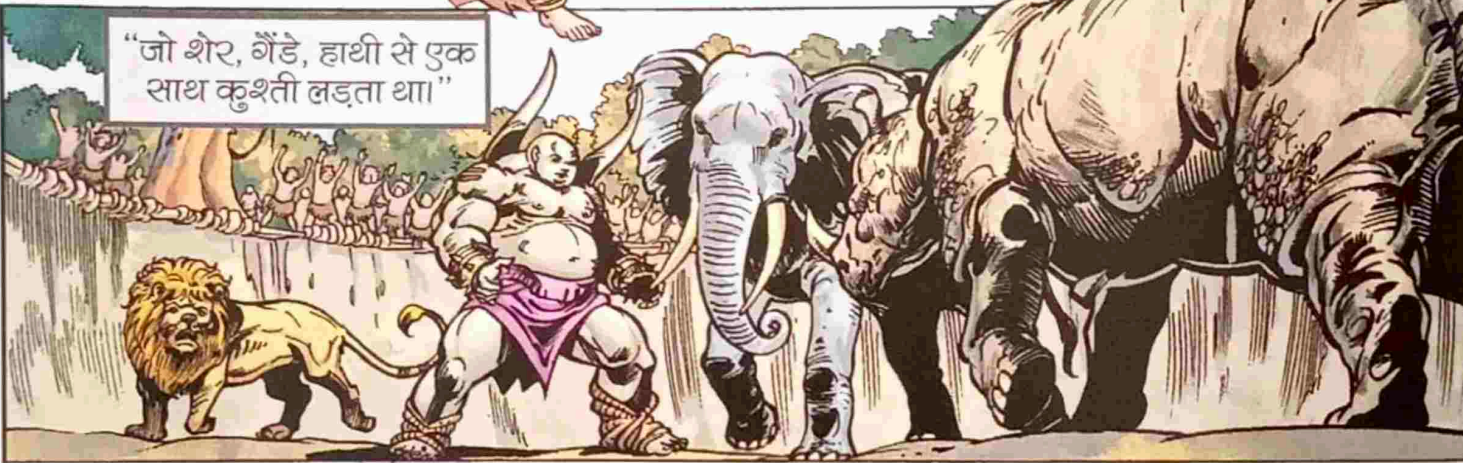
"गैंडे के सींग, हाथी दांत, शेर-चीते की खाल का विश्व में सबसे बड़ा तस्कर।"
"और अफ्रीका के संगठित आतंकवाद का सरगना। हथियारों का सबसे बड़ा तस्कर।"

"अफ्रीका में सरकार किसी की भी हो, राज सिर्फ और सिर्फ थोडांगा ही करता था। थोडांगा के एक इशारे पर सत्ता का तख्ता पलट हो जाता था।"

पूरे महल को छावनी में बदल दो कमांडर।
एक परिंदा भी हवा में उड़ता दिखाई दे तो मार गिराओ...और पूरी सेना को आदेश दो कि तंजानिया के जंगलों में घुस कर उस आतंकवादी थोडांगा का शिकार करें।
जो आदेश जनरल।
"और मैं आपको यह आश्वासन देता हूँ मित्रों कि थोडांगा को देवता सिर्फ नाम के लिए नहीं कहा जाता था। जो भी थोडांगा के विरुद्ध जाने की कोशिश करता था..."

"...जिन्दगी उसके विरुद्ध चली जाती थी..."

"...वह भी बेहद दर्दनाक तरीके से, बहुत ही धीरे-धीरे कर के।"

उस जंगली सूअर को कुत्ते की मौत मा... आह!!!

जनरल!! हे भगवान्, जनरल की बाहें अपने आप कैसे उखड़ गयीं?

उफ़! जनरल खून की उल्टियां कर रहे हैं और खून के साथ कीलें और सुइयाँ बाहर निकल रही हैं।

उवैक!

यह काला जादू है!

"...क्योंकि थोडांगा की जो शक्ति उसे सबसे सर्वशक्तिमान बनाती थी वह थी..."

"...अफ्रीका का काला जादू, वूडू!"

हाहाहा... बेवकूफ जनरल। सत्ता मिलते ही खुद को भगवान् समझने लगा था।

भूल गया था कि अफ्रीका में सिर्फ एक ही भगवान् है... सम्राट थोडांगा!!

"सम्पूर्ण अफ्रीका महाद्वीप सम्राट थोडांगा के सींगों पर टिका हुआ था जिसपर राज करता था..."

"और दूसरा, सतरंगी गैंडे का सींग हासिल करना। सतरंगी गैंडा जिसके सींग में काली शक्तियों को नियंत्रित करने की अद्भुत क्षमता होती है। संसार का एकमात्र सतरंगी गैंडा कई बार मेरे चुंगल में आते-आते निकल चुका था।"
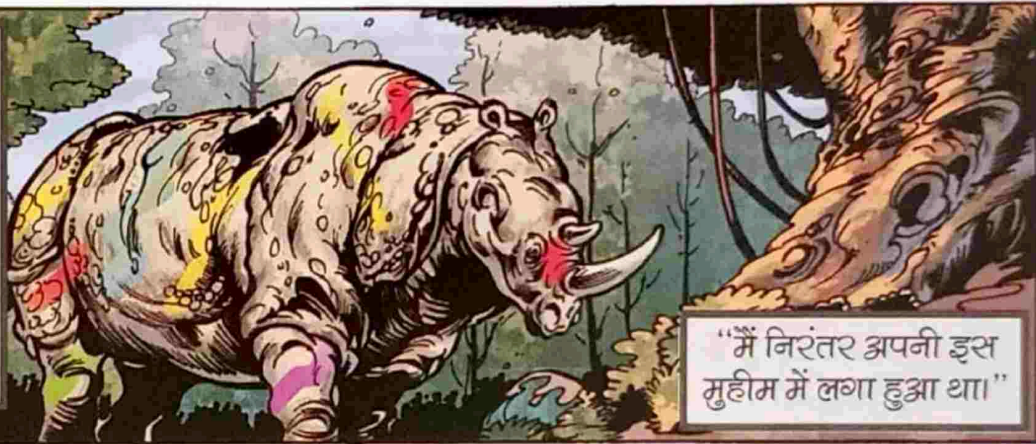
"लेकिन अफ्रीका के देवता की कुंडली में जैसे किसी कालसर्प दोष के जैसे आया था वह नाग।"
कितना नयनाभिराम दृश्य है इन घाटियों का तक्षिका।
हाँ नागराज। कुछ दिनों यहीं ठहरने को जी करता है।
पर हम यहाँ छुट्टियां मनाने नहीं आए हैं तक्षिका।
हम यहाँ खुद को अफ्रीका का देवता कहलाने वाले सम्राट थोडांगा के आतंक से अफ्रीका की त्राहिमाम करती निरीह जनता को मुक्ति दिलाने की मुहीम पर आए हैं।
ओह! वहां नीचे क्या हो रहा है नागराज?
ये तो सेना के जवान हैं जो आदिवासियों को बंधक बना कर शूट करने वाले हैं।
अरे! यह कैसा विचित्र जीव मंडरा रहा है आसमान में?
उसे छोड़ो और इन्हें शूट करने पर ध्यान दो।
यस कमांडर!

"मौत के अंगारों के लपलपाने से पहले ही हवा में लहराए वे जहरीले सैनिक।"
ओह... सांप!!
ये हवा में सांप कहाँ से आए?
ये तो हमारे हाथों से गन्स निकाल कर ले गए!
कौन हो तुम लोग और क्यों इन गरीब आदि-वासियों का खून बहाना चाहते हो?
पहले तुम बताओ तुम कौन हो?
शायद तुम्हें पता नहीं, अफ्रीका में सरकारी कार्य में बाधा डालने और जनरल जुलू का विरोध करने की सजा मौत है।
तुम लोगों को देखकर आज मेरे मन में अपने देश की सेना के लिए सम्मान और बढ़ गया।
धिक्कार है उन मूर्खों पर जो भारत की सेना पर पिछड़ों और आदिवासियों पर अत्याचार के मिथ्या आरोप लगाते हैं। ऐसे सभी बुद्धिजीवियों को यहाँ बसा देना चाहिए। आततायी का सही मायने में अर्थ पता चल जाएगा उन्हें।
जरूरत से ज्यादा जुर्रत करती तेरी जबान मैं हमेशा के लिए खामोश किए देता हूँ।

तुमने अपनी चला ली, अब मेरी बारी।
नागराज की सेना ने बंधकों को आजाद कर दिया।
इसके हाथों से सांप छूट रहे हैं, यह आदमी है या जादूगर!
इसकी स्नेक स्टाइल अद्भुत है, वार इतने तेज कि नजर ही नहीं आ रहे।
"यूं तो पूरी सेना की टुकड़ी के लिए अकेला नागराज ही काफी था..."

"...फिर भी उन चार सूरमाओं के साथ ने मिनटों का काम चुटकियों में निपटा दिया।"
"...ये थे पोमा, चोमा, क्रो और सुगा।"
ओह! कमांडर भाग रहा है।
उसे जाने दो मित्र, मैं चाहता हूँ कि नागराज के आगमन का सन्देश जनरल ज़ुलू तक पहुँच जाए।
तुम कौन हो मित्र? यहाँ के तो नहीं लगते।
तुमने हमारी प्राण रक्षा की है हम तुम्हारे ऋणी हैं।
मेरा नाम नागराज है।
उठो साथियों, मित्रता में ऋण कैसा।
"जनरल ज़ुलू को वह नाम नाग के दंश जैसा ही प्रतीत हुआ था।"
नागराज!! उसके हाथों से सांप छूटते थे?
हो न हो यह प्रोफेसर नागमणि का वही हथियार है जिसकी कुछ समय पहले उसने नीलामी करने की कोशिश की थी।

देवता थोडांगा तक पहुँचने के उसके खतरनाक इरादे पूरे नहीं होने चाहिए और साथ ही मोरी कबीले वालों का वह हाल करो कि दूसरा कोई भी कबीला देवता थोडांगा के खिलाफ आवाज उठाने की जुर्रत ना करे।

"जनरल जुलू ने अपने आदिवासी कबीले के सरदार और अपने गुलाम टांगो को बुलाया और नागराज के विषय में बताया।"

मेरे कबीले की इंसानी मांस और खून की प्यास बुझाने का यह जो अवसर आपने प्रदान किया है उसके लिए मैं आपका कृतज्ञ हूँ महामहिम।

"उस रात मोरी कबीले का नागराज विशेष मेहमान था।"

तुम्हारी शक्तियां अद्भुत हैं दोस्त, हमें यकीन है कि तुम उस राक्षस थोडांगा और उसके पालतू जनरल जुलू के आतंक से मुक्ति दिलाने में हमारा साथ दोगे।

मैं अफ्रीका इसी उद्देश्य से आया हूँ दोस्त।

"नागराज के आगमन के जश्न को मौत के मातम में बदलने के लिए टांगो का भाई नरभक्षी कांगो अपने खूनी कबीले के साथ मोरी कबीले पहुँच चुका था।"
नरभक्षी खूनी कबीला!!
आक्रमण!! मुकाबला करो साथियों।
खूनी कबीला?
यह लोग जुलू के गुलाम हैं नागराज। जिंदा इंसानों को मार कर कच्चा खा जाने वाले जंगली जानवर हैं ये।
"उस मासूम की गर्दन पर दांत गड़ा दिए हैवान ने।"
कौन है रे नागराज यहाँ?
"उस जहरीले की आंखों से अंगार और मुख से विष फुंकार की ललकार फूट पड़ी।"
कांगो! मासूम बच्चे को अपना शिकार बनाने वाले दरिन्दे...

कितना स्वादिष्ट होगा तेरा जहरीला मांस!
तेरी कसी हुई बोटियाँ नोच-नोच कर खाने के लिए मेरे दांतों में खुजली मच रही है, नागराज।
बहुत बुरी मौत मारेगा नागराज तुझे।

ले मिटा ले अपने दांतों की खुजली।

और उसके साथ अपना वजूद भी।
"अगले ही पल एक दर्दनाक चीख के साथ मोम के पुतले के समान पिघल गया कांगो।"

"कुछ ही देर में नरभक्षी खूनी कबीला जो वहां मौत का क्षुधा नृत्य करने आया था नागराज के विष तांडव से खुद काल का ग्रास बन गया था।"
हुर्रे!! नरकनाशक नागराज!!
हमारा दोस्त!! हमारा हीरो!!
मोरी कबीले में खुशी की लहर दौड़ गई।
पापाध्यक्ष की सभा में थोडांगा का कथा वर्णन सुन रहे श्रोताओं का सब्र जवाब दे रहा था।
इस कहानी में ऐसा भला क्या खास है जो हम इसे सुनें?
नागराज के कारनामों के ऐसे सैकड़ों-हजारों किस्से हैं।
हाँ! हर किस्सा सुनने बैठेंगे तो नागराज के कारनामों पर पूरा नागग्रन्थ लिखना पड़ जाएगा।
...मैं जब कहानी सुना रहा होऊं तो कहानी कितनी भी लम्बी हो चुप मार कर सुनो...

वर्ना!!!

...मुंडी मरोड़ दूंगा सालों!

आह!

थोडांगा की मोटी-भौंडी उँगलियों में दबे पुतलों की नाजुक गर्दनों के साथ महाखलनायकों की साँसों की डोर भी टूट जाती...

हमारा अनुरोध है कि आप अपनी कथा जारी रखें सम्राट थोडांगा। अब आपको बीच में टोकने की घृष्टता कोई नहीं करेगा। क्यों साथियों?
ह... हाँ! हाँ...कोई नहीं करेगा।

हाहाहा...मजा आएगा। आगे सुनो अब, पहले इन पुतलों को संभाल के कमर में बाँध लूं, गलती से कहीं इनके हाथ-पैर टूट गए तो बेवजह लंगड़े-लूले हो जाएंगे महाखलनायक।
थोडांगा ने कहानी आगे बढ़ाई।

"मोरी कबीले वाले अपनी और नागराज की जीत पर जश्न मना रहे थे, इस बात से अनजान कि उनकी जीत में ही उनकी हार छुपी थी।"

"मेरा गुलाम जुलू जैसे इसी पल की प्रतीक्षा में था।"
ओमाचा-डोडो कोचटा-कोचटा

"मेरे गुलाम ने उन सभी अतृप्त नरभक्षी आत्माओं को अपने वश में कर लिया।"
"खूनी आत्माएं!"
"खूनी कबीला रक्तपिशाच आत्माओं में बदल गया था।"
इन आत्माओं पर हमारे हथियारों का कोई असर नहीं हो रहा।
यह जरूर थोडांगा और उसके पालतू जुलु का काला जादू है, सिर्फ वही आत्माओं को काबू कर सकते हैं।
अब हम क्या करें नागराज? इन लहू की प्यासी रूहों का मुकाबला कैसे करेंगे हम?
"काले जादू और परालौकिक शक्तियों से नरक नाशक नागराज की वह प्रथम मुठभेड़ थी।"

"नागराज खुद भी भौचक्का था।"
सर्प सैनिक, विष फुंकार, स्नेक हैण्ड, सर्प दंश, कोई भी शक्ति इन आत्माओं पर काम नहीं कर रही।
क्योंकि ये जीवित शरीर नहीं हैं इसलिए ये मेरा खून चूसने पर भी पिघल नहीं रहे।
ऐसा लग रहा है जैसे ये मेरे जिस्म का सारा खून सोख रहे हों।
मैं किसी भी तरह खुद से इनको अलग नहीं कर पा रहा।
तक्षिका! क्या तुम इन रक्तपिपासु आत्माओं से निपटने में सहायता कर सकती हो?
इनकी शक्ति का स्रोत तंत्र-मन्त्र नहीं बल्कि काला जादू है नागराज...
"नागराज के साथ-साथ तक्षिका भी उन आत्माओं के चुंगल में फंस गई थी।"
मेरी शक्तियां इनपर बेअसर हैं। उफ, यह तो जोंक की तरह चिमट गई हैं।
जल्दी करो तक्षिका, वापस मेरे जिस्म में समा जाओ।
नहीं नागराज, मैं इस तरह मुश्किल में तुम्हें अकेला नहीं छोड़ूंगी।

मेरा कहा मानो तक्षिका, सिर्फ एक ही तरीका है जिससे हम इन खूनी आत्माओं के चंगुल से बच सकते हैं।
ठीक है, नागराज! जैसा तुम कहो।

"अगले ही पल नागराज खुद भी अपने नागरूप में आ कर..."

"...पास ही एक पेड़ की जड़ में नजर आ रहे सांप के बिल में घुस गया।"

जान बचाने का फिलहाल यही एक तरीका नजर आ रहा है।
"बुरी तरह घायल नागराज की आंखों ने बेहोश होने से पहले वह अंतिम दृश्य देखा।"
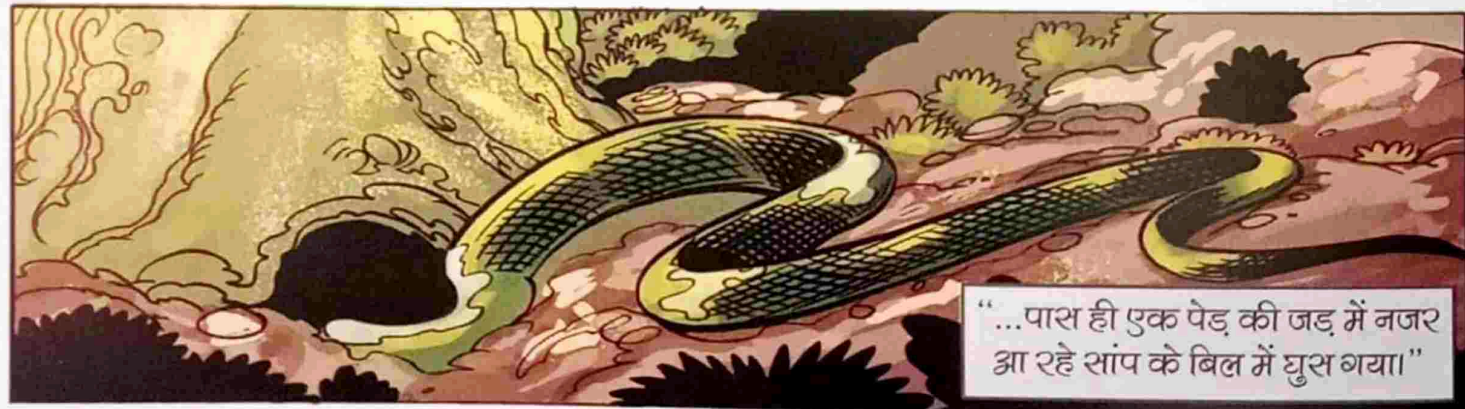
पाप परिषद् में सन्नाटा पसरा हुआ था।

हर एक महाखलनायक आवाक था।

अब थोडांगा मजाक उड़ाने की हिम्मत उनमें से किसी भी महाखलनायक की ना हुई।

तो दोस्तों, इस तरह विश्व आतंकवाद का दुश्मन नरक नाशक नागराज मेरे एक अदने से गुलाम की शक्तियों के आगे दुम दबा कर बिल में घुस गया था।

एक ओर जहाँ पाप परिषद् में आए नए आगंतुक से अनभिज्ञ महाखलनायक नरक नाशक नागराज की पराजय और पलायन की दास्तान सुनने में व्यस्त थे...

...दूसरी तरफ नरक नाशक नागराज...
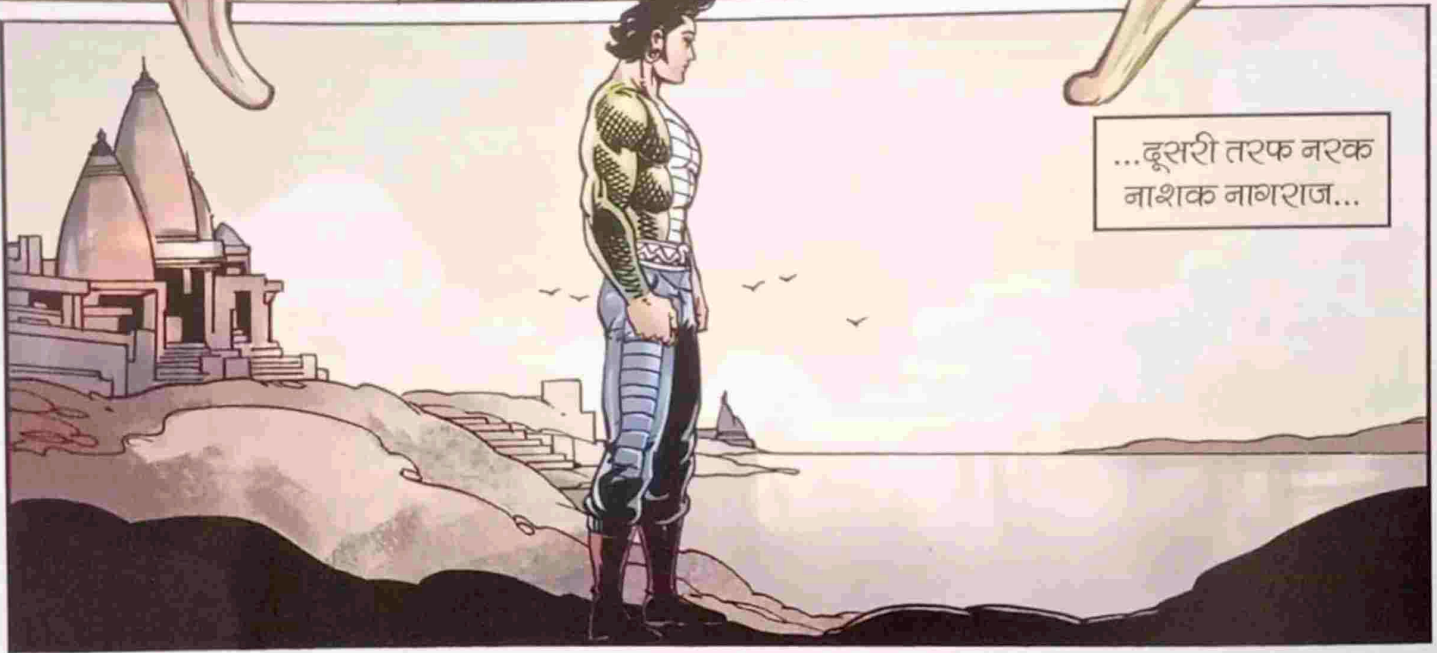
लेकिन मेरे कुत्ते साथियों का कहना है कि बुरे लोगों का गढ़ यहीं आस-पास ही है।

मेरी श्वान इंद्री भी यही कहती है।

मेरी नाक सूंघ सकती है वो गंध...यहाँ कोई तो है...

...जिसके इरादे नेक नहीं हैं।

रुक जा!!

यहाँ लोगों की भीड़ बहुत ज्यादा है। वह संदिग्ध हाथ से निकला जा रहा है, मुझे कुछ करना होगा।

हटो रास्ते से... जाने दो...

...रास्ता छोड़ो!

च्यूम!

दूसरा कोई रास्ता नहीं है।

ओह! मौके का फायदा उठाकर वह निकलने में कामयाब हो गया।
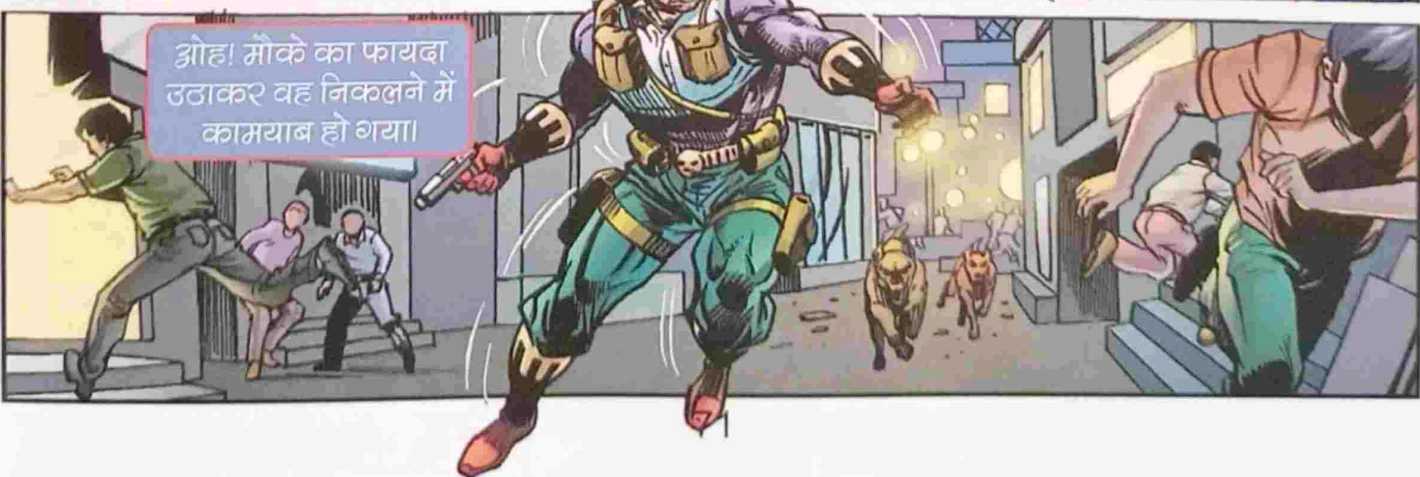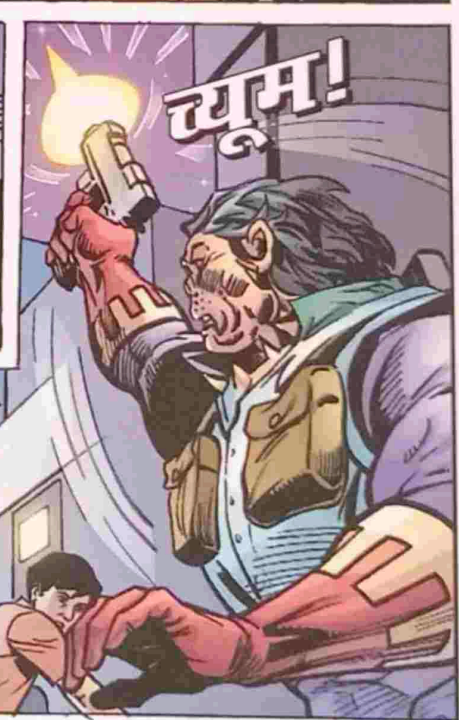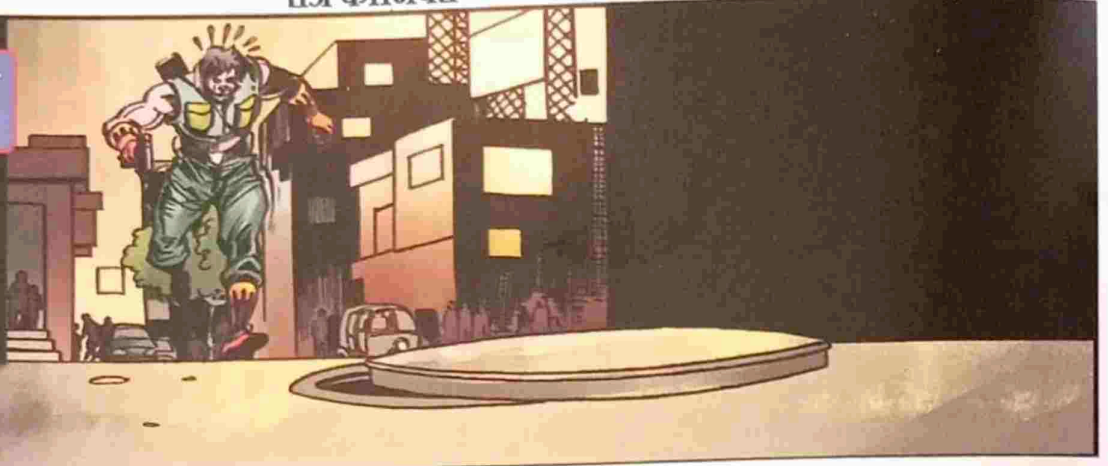
क्या इस विशाल ड्रेनेज सिस्टम में?

मुंबई की तरह ही पुरानी काशी नगरी के नीचे अंडरग्राउंड ड्रेनेज सिस्टम का सघन जाल बिछा हुआ है।

मुझे उस संदिग्ध की गंध मिल रही है।

अपना अलग ही पाताललोक बना रखा है इन असुरों ने!

सिर्फ एक पल लगा शिकारी और शिकार को एक-दूसरे को तौलने में।

उसके अगले ही पल यह अंदाजा लगा पाना मुश्किल था कि...

तड़ड़ड़ड़ड़

..शिकारी कौन है और शिकार कौन।

बैंग

गर्ईईरर

बैंग

बैंग

बैंग

आतंकवाद के खिलाफ डोगा की रगों में खौलता लावा सैलाब बन कर अपने रास्ते में आने वाली हर शह को मिटा देने पर आमादा था।
पिक
पिक
पिक
मौत के मुहाफिज साक्षात मौत के जबड़े में फंसे निरीह कबूतरों की तरह फड़फड़ा रहे थे।
काशी कोतवाल के वाहन का तांडव तो अभी शुरू हुआ था।
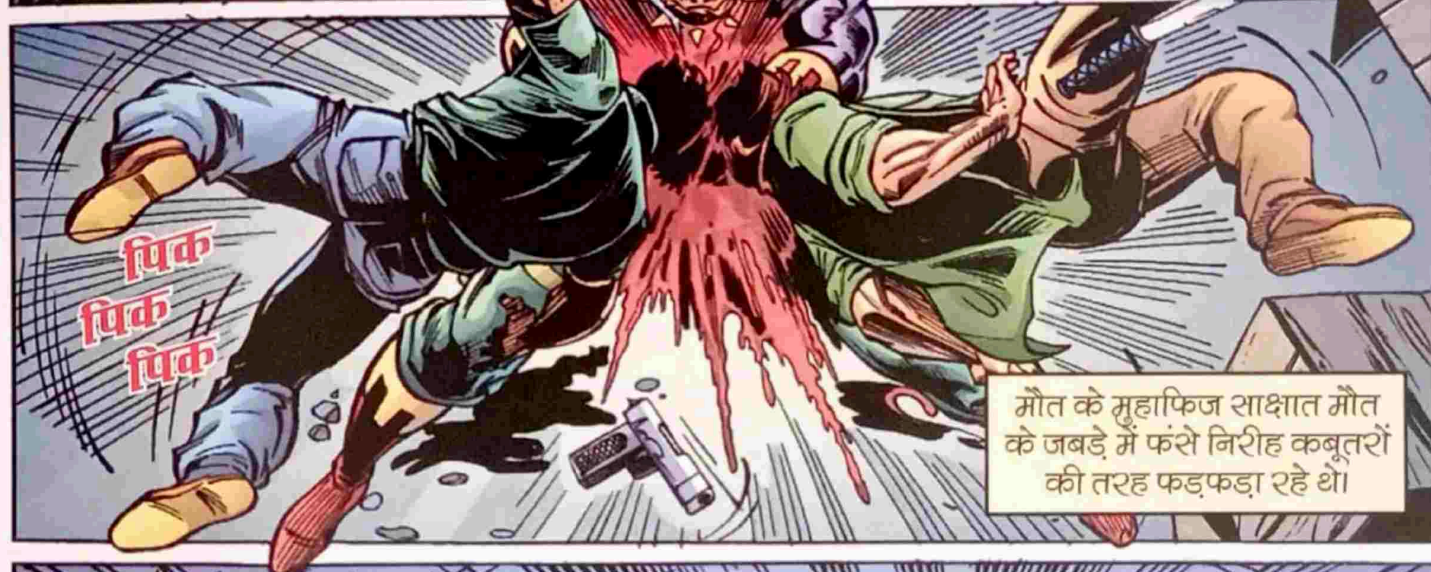
उसके रौद्र रूप से अभी धरती फटने वाली थी।
धरती काँप रही है।
सड़क फट रही है बे!!
भूकम्प आ रहा है।

आसमान हिलने वाला था।
कड़ाक

एक तरफ डोगा आतंकवादियों के संहार का तांडव नृत्य कर रहा था...
दालमंडी के नीचे बममंडी बसाए बैठे थे आतंकी।
पहले इन लोगों ने मंदिर उड़ाने की कोशिश की अब ये हरकत। डोगा नहीं आता तो जाने क्या होता।

...तो दूसरी तरफ नागराज किसी तलाश में था।
रत्नेश्वर महादेव मंदिर।
एक ओर झुके हुए इस मंदिर का गर्भ गृह सदैव गंगा नदी में डूबा रहता है।
अगर मेरे सर्प सैनिक सही हैं तो मुझे इस मंदिर के गर्भ गृह से अपने प्रश्नों के उत्तर मिल सकते हैं।
गर्भ गृह में शिवलिंग से जलसर्प लिपटे हुए हैं।
ओह! यह सर्प कहीं जा रहे हैं, मुझे इनके पीछे जाना होगा।
कई सौ साल पुराने इस घाट की सीढ़ियों के पत्थर और मिट्टी में नदी के पानी के कटाव से गहरी सुरंग बनी हुई है।
यह सुरंग ही इन जलसर्पों का घर है शायद।
मैं फेफड़ों में खत्म होती ऑक्सीजन को लेकर चिंतित था लेकिन पानी खत्म होते ही यहाँ तो बिलकुल ऊपर धरती के जैसे ही शुद्ध ऑक्सीजन व्याप्त है।

हे गुरु गोरखनाथ! यह क्या है?
काशी नगरी और गंगा के ठीक नीचे एक पातालनगरी बसी हुई है।
नागलोक में तुम्हारा स्वागत है तक्षक। कई शताब्दियाँ लगा दीं तुमने वापस आने में।
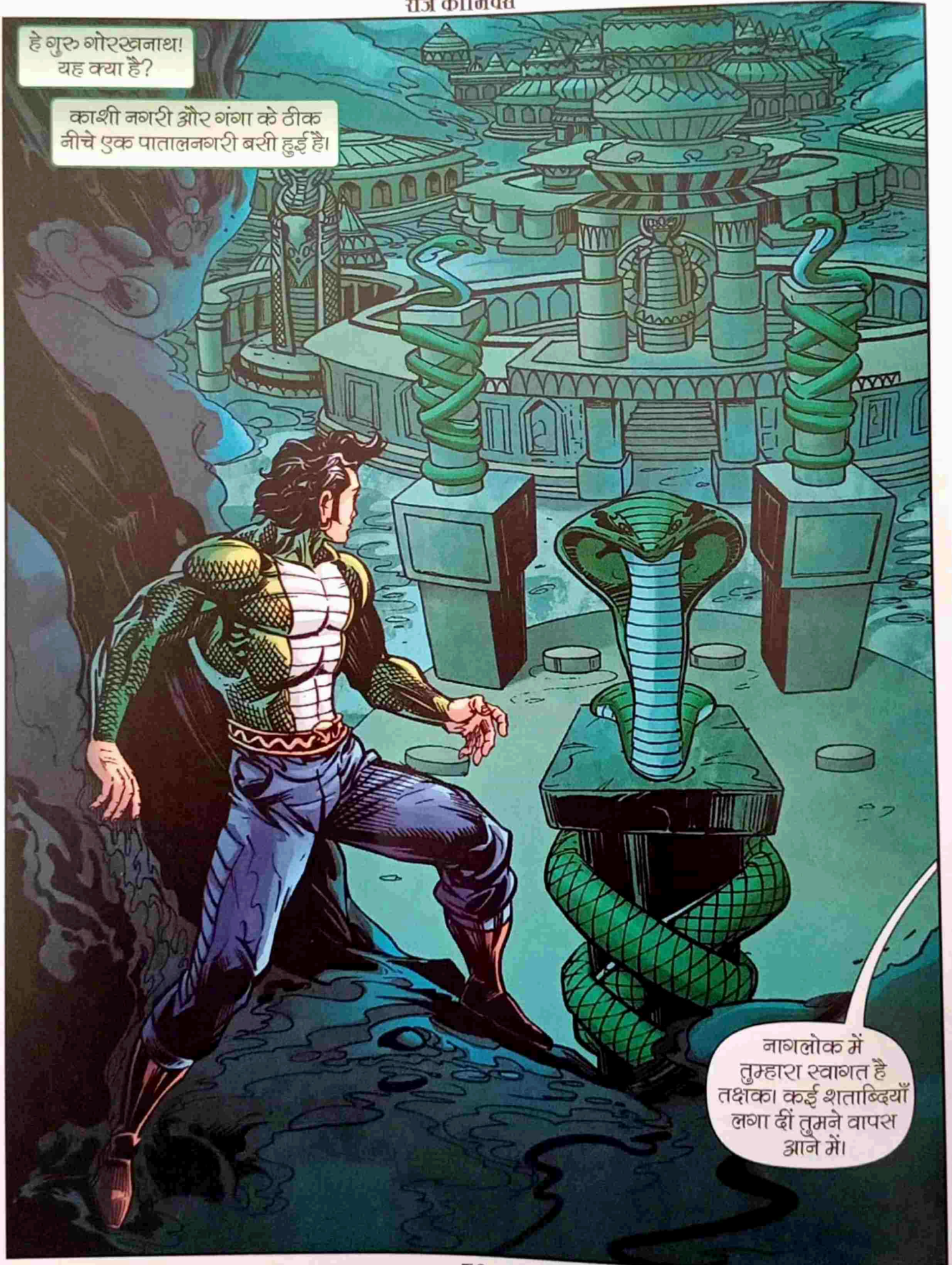
नागलोक? यह नागलोक क्या है? आप कौन हैं महात्मन?
हमें नागलोक वासी नागबाबा पुकारते हैं, तक्षक।
यह नागलोक नगरी है, जिसका अस्तित्व ऊपर बसी विश्व की पहली नगरी काशी जितना ही पुरातन है।
परन्तु आपने मुझे तक्षक क्यों पुकारा? क्या आप मुझे जानते हैं?
हम सिर्फ भविष्यवाणी के विषय में जानते हैं तक्षक जो आपको शताब्दियों पश्चात पुनः नागलोग में लाई है।
कैसी भविष्यवाणी बाबा? आपकी बातें मेरे लिए किसी अबूझ पहेली के समान है।
यह पहेली तो तुम्हें स्वयं ही सुलझानी होगी, तक्षक।
?
इस पहेली के पहलुओं से मैं अनभिज्ञ हूँ परन्तु अपने जिन प्रश्नों के साथ तुम यहाँ जल सर्पों का पीछा करते हुए आए हो उन प्रश्नों के उत्तर मैं अवश्य दे सकता हूँ।
मैं जानता हूँ तक्षक कि तुम मानव आतंकवाद और नागशक्तियों के जुड़े सूत्रों की खोज में यहाँ आए हो।
इस नागलोक के मांत्रिक सर्प निर्दोष हैं, उनका आतंकवाद से कोई सम्बन्ध नहीं, परन्तु सर्पों की एक जाति है जो मानवों का समूल नाश करने के उद्देश्य से दुष्ट प्रवृति के मानवों का ही साथ दे रही है।
मेरी बात ध्यान से सुनो तक्षक...
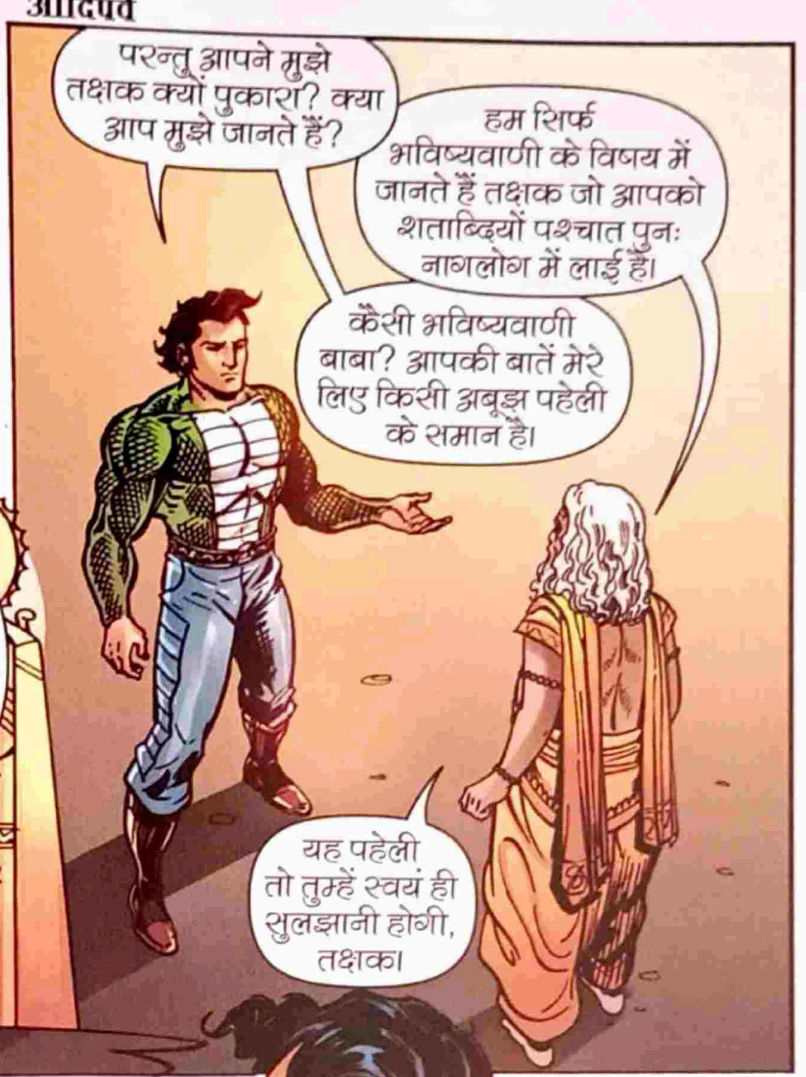
नागराज के सामने रहस्य की कुछ परतें खुल रही थीं दूसरी तरफ डोगा ने दुश्मनों की बखिया ही उधेड़ दी थी।
इनकी मास्टर प्लानिंग काफी हद तक समझ में आ रही है।
अगर यह कमीने अपनी प्लानिंग में कामयाब हो जाते तो सच में कयामत आ जाती।
!
अरे! यह ऊपर से कागज कैसा उड़ते हुए आ रहा है।
कुत्ता क्या जाने अदरक का स्वाद'?
अचानक डोगा को ऐसा प्रतीत हुआ जैसे उसके दिमाग की सभी नसें फट जाएंगी।
लेकिन कहावत तो बन्दर क्या जाने अदरक का स्वाद है! क्या यह किसी तरह की पहेली है?
अल्ट्रासनिक व्हिसल। अल्ट्रासॉनिक साउंड सिर्फ कुत्तों को सुनाई देता है और उन्हें बेहद तकलीफ पहुंचाता है।

मैंने अपनी ल्ट्रासॉनिक व्हिसल खास डिजाइन की थी जिससे मेरी कुत्ता फौज को तकलीफ ना पहुंचे लेकिन यह अल्ट्रासॉनिक व्हिसल काफी हाई डेसिबल पर सेट है...
ऐसा लगता है जैसे इसे खास मुझे काबू में करने के लिए बनाया गया हो।
जैसे इस व्हिसल को बजाने वाला मेरे म्यूटेशन के बारे में जानता हो...
जैसे वह जानता हो कि मेरी अनियंत्रित श्वान शक्तियों को यह अल्ट्रासॉनिक ध्वनि नुकसान पहुंचाएगी।
मेरा दिमाग सुन्न पड़ रहा है।
कुत्ता काबू में आ गया है...
...लेकिन ज्यादा समय तक रहेगा नहीं। अपना काम जल्दी खत्म करो।
जी, डॉग ट्रेनर।
मशीनें स्टार्ट करो, हाइड्रोलिक पाइप का प्रेशर बढ़ाओ।
कुछ ही समय में पुलिस यहाँ पहुँच जाएगी...
डॉग ट्रेनर? कौन है यह डॉगट्रेनर? यह मुझे इतना जाना-पहचाना सा क्यों लग रहा है।

...पुलिस को तुम सबकी लाशों के चिथड़ों के अलावा कुछ नहीं मिलेगा।
माना बहुत खूंखार है तू...पागल कुत्ते की तरह तेरे जबड़े जुर्म को भभोड़ने के लिए मचल रहे है...
लेकिन मेरे पंजे तेरे जैसे कुत्तों को तमीज सिखाने का काफी तजुर्बा रखते हैं।
यह खास रेस्लर्स हेडलॉक मूव!!
यह खास फाइटिंग टैकनीक!!

अगले कई मिनटों तक उन दोनों महारथियों के बीच वर्चस्व की लड़ाई चरम पर चलती रही।
हिंसक पशु प्रवृति को पालतू बनाने की डॉगट्रेनर की जिद और अनुशासन के उस आतंकी अंकुश को भभोड़ डालने की डोगा की हठ दोनों एक-दूसरे पर भारी पड़ रहे थे।
...दोनों का हर मूव, हर वार बिलकुल सधा हुआ था...
...और ऐसा लग रहा था जैसे दोनों ही ना सिर्फ एक दूसरे के मूव्स से भली भाँती परिचित हों बल्कि एक-दूसरे के हर दांव की काट भी जानते हों।

इस दौरान एक-पल के लिए भी डॉगट्रेनर की नजरें अपने आदमियों की मशीनों पर थिरकती उँगलियों से नहीं हटी थी।
ऐसा लग रहा था जैसे वह उनका हर कमांड अपने जहन में बिठा रहा हो।
और डोगा के जहन में उसके विचारों की आंधी घुमड़ रही थी।
और वो आंधी उसकी आँख की किरकिरी बनने वाली थी।
मेरे ऊपर आकर गिरा वह कागज क्या जानबूझ कर मुझ पर फेंका गया था?
ओह! आधे पल के लिए मेरा ध्यान भटका और इसने बाजी पलट दी।

तेरे गले में पट्टा डालकर तुझे पालतू बनाऊंगा कुत्ते।
मैं कुछ भी कर के इसकी जकड़ से नहीं छूट पा रहा। ह्मफ!
अब उस पहेली का मतलब मेरी समझ में आ रहा है... 'कुत्ता क्या जाने अदरक का स्वाद'।
और अगर मेरी समझ सही है तो सिर्फ एक ही वार मुझे इसके पंजों से आजाद कर सकता है।
दर्द से दोहरा हुआ प्रशिक्षक एक पल को चूक गया...
उस जानवर के लिए वह एक ही पल काफी था प्रशिक्षक को यह एहसास दिलाने के लिए कि...
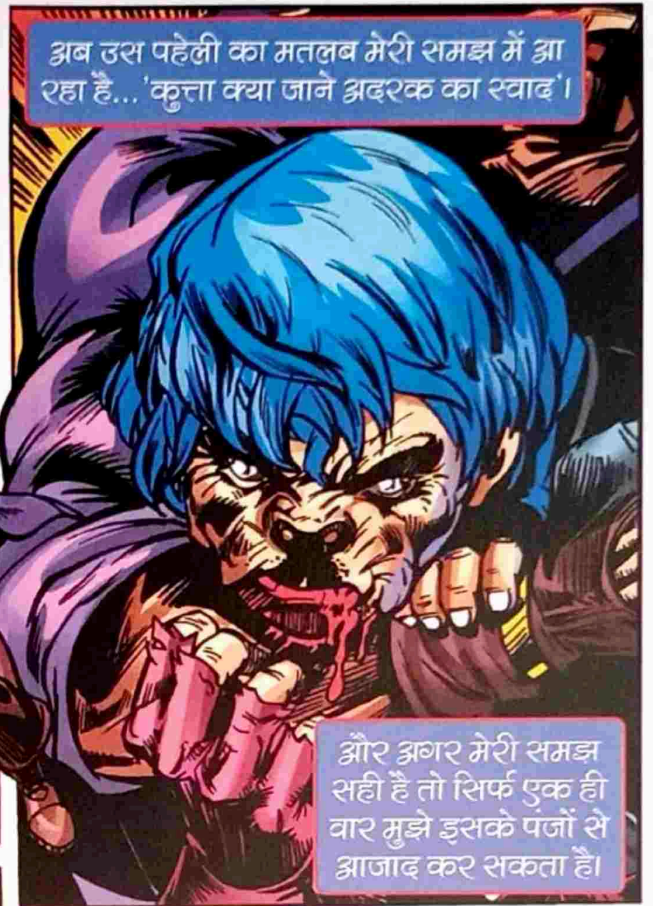
...इस कुत्ते को पालतू नहीं बनाया जा सकता।

कण्ट्रोल तबाह हो गए, हाइड्रोलिक प्रेशर बेकाबू होकर बढ़ रहा है। निकलो यहाँ से वर्ना सब...

च्यूम

च्यूम

च्यूम

च्यूम

तुममें से कोई एक भी जिंदा बाहर निकल गया तो डोगा लानत से खुद को गोली मार लेगा!

दूसरों की मौत का इंतजाम करने वाले उस कुत्ते सी सूरत वाले के हाथों कुत्ते की मौत मारे गए।

बंदूकों का लावा शांत हो गया पर डोगा के मस्तिष्क में ज्वालामुखी फूट रहे थे।
उसके कांपते कदम उस निढाल शरीर की तरफ बढ़े जिसमें अब हल्की हरकत हो रही थी।
ज्वालामुखी फूट चुका था और उस ताकत के पहाड़ के अंदर भरा दुनिया से मिले दर्द और तिरस्कार का लावा उसके पिंजर को अंदर से ही गला कर खोखला कर रहा था।
उन कांपते कदमों में अब शक्ति नहीं थी शायद इसीलिए उसका सिर उन पैरों पर झुक गया जिन्हें किसी पुराने बरगद की गहरी जड़ों के समान उसने कुछ देर पहले ही धरती से उखाड़ा था।
तू अपने दुश्मन को जिंदा नहीं छोड़ता ना?
गन क्यों गिरा दी, उठा इसे और लगा निशाना।
जिस भगवान् ने पाप के संहार के योग्य बनाया उसका संहार कैसे करूँ यह तो बता दो...
तो तू पहचान गया मुझे...तूने मेरी उस टांग पर वार किया जो तेरे कारण टूटी थी तभी मुझे समझ जाना चाहिए था।
...मेरे अदरक चाचा। हाँ! यह कुत्ता नहीं जानता अदरक का स्वाद।
डोगा जान चुका था कि यह वही बरगद है जिसने उसके लावारिस बचपन को मातृत्व की छाँव और पिता सा संरक्षण दिया है।

नहीं चाचा! इन रगों से खून का एक-एक कतरा निकाल कर देख लो उसका खारापन मेरी वफादारी का सबूत देगा।

मुझे तेरे खून का खारापन नहीं देखना लड़के...

...मेरी आंखों के सामने अब भी मेरे तीनों भाइयों की लाशों का मंजर है।

उनके खून की ताम्बाई गंध अब भी इन नथुनों में बसी हुई है। तू उनकी मौत का जिम्मेदार है गुरुघाति!! तूने उनकी जान ली है!!

उस दिन का बचा हुआ काम खत्म कर ले...मुझे भी मार डाल नमकहराम कुत्ते।

लेकिन गोली तुझे मेरी पीठ पर चलानी होगी।

आतंकियों का मंसूबा गंगा नदी में कृत्रिम बाढ़ ला कर पूरे शहर को डूबा देने का है जिसमें सैकड़ों, हजारों जाने जाएंगी और करोड़ों की संपत्ति और बहुमूल्य धरोहर नष्ट हो जाएगी।
अपनी बेवकूफी से तूने कण्ट्रोल मशीन नष्ट कर के इस तबाही को रोक पाना नामुमकिन कर दिया है।
अपना भगवान् कहता था न तू मुझे?
मैं कोई भगवान् नहीं हूँ लेकिन फिर भी नास्तिक हो गए अपने भक्त पर इतना यकीन आज भी है मुझे कि...
...तू नामुमकिन को मुमकिन बनाने का कोई ना कोई तरीका ढूंढ लेगा।
अब फैसला तेरे हाथ में है कि तू सैकड़ों मासूम जिंदगियां बचाना चाहता है या फिर मेरी पीठ पर गोली चलाकर अपने गुरुघाति होने की तहरीर पर बारूद की मोहर लगाना चाहता है।
सूरज के हाथ अदरक चाचा पर गोली चलाने में काँप सकते हैं...
लेकिन डोगा के हाथ कभी किसी अपराधी पर गोली चलाने में ना काँपे यह शिक्षा मैंने अपने गुरुओं से ही पाई है।
जब तक तुम्हारे बेगुनाह या गुनाहगार होने की पुष्टि नहीं होती मेरे बारूद की लगाम ढीली नहीं पड़ेगी।
फिलहाल वहां होने वाली विनाशलीला को रोकना ज्यादा जरूरी है।
वऊ वऊ वऊ वऊ
आखिरकार पुलिस भी आ ही गई है।

ड...डोगा! यह तो मुंबई शहर का वांटेड मुजरिम है। मतलब खबर सच थी, हमें लगा फिर साला कोई चरसी चिलम फूंक के थाने फोन कर दिया।

डोगा ने वस्तुस्थित समझाई। कानून के रखवाले भी इंसान थे और उस पल इंसानियत कानून से ऊपर थी।

मेरे पास वक्त नहीं है, ब-मुश्किल आधे से एक घंटे में काशी पुरातन द्वारिका नगरी की तरह जलमग्न हो चुकी होगी।

इसलिए मुझ पर समय बर्बाद करने के बजाए इस पूरे एरिया को वेकेट कराना शुरू करो।

जिस सीरियल किलर की पहेलियों का पीछा करते हुए मैं यहाँ आया हूँ यकीनन उसने ही अदरक वाली पहेली भेजी है...

यानी वह जो भी है डोगा के सूरज और अदरक चाचा से सम्बन्ध के बारे जानता है...
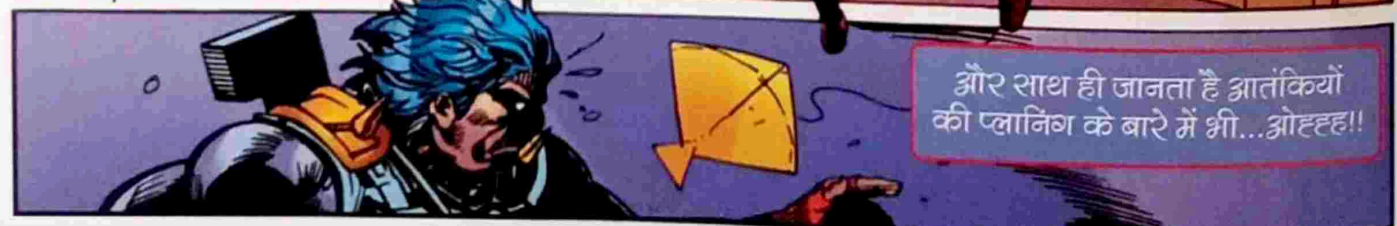
और साथ ही जानता है आतंकियों की प्लानिंग के बारे में भी...ओह्हह!!

एक और पहेली! अगर इसे मैं सुलझा लूं तो शायद आने वाली तबाही को रोकने का रास्ता मिल जाए।
लोहे की मछली
साधु की गागर
पहेली पढ़कर डोगा का दिमाग घूम गया था।
लोहे की मछली? साधू की गागर? क्या है यह?
पुलिस जगह खाली कराने में जुटी हुई थी...
POLICE
जल्दी-जल्दी सब लोग निकलो।
सामान तो लेने दो।
सामान जरूरी है या जान...निकलो सब यहाँ से।
परन्तु यह इतना आसान ना था। कुछ शक्तियां थी जिनके इरादे नेक ना थे।
बहुत सहन कर चुके आतंकवाद, अब सहन ना होगा
हमारी सांस्कृतिक धरोहर, हमारे मन्दिर, हमारे भगवान पर वार करने वालों को ना छोड़ेंगे!!

लहरों से पहले सांप्रदायिक ताकतें ही जैसे उस सांस्कृतिक नगरी को रक्त रंजीत करने को लालायित थीं।
हमारे बर्दाश्त की इन्तेहाँ हो गई है। इस बार फैसला और लड़ाई आर-पार की होगी भाईयों!!

ऐसा लग रहा था महादेव भी अपनी नगरी की होने वाली दुर्दशा पर रुदन कर रहे थे जो सैलाब बनकर संहार करने बढ़ रही थीं।
हे भगवान!! यह क्या हो रहा है?
नदी के पानी में एकाएक इतना प्रचंड तूफान कैसे उठ रहा है?
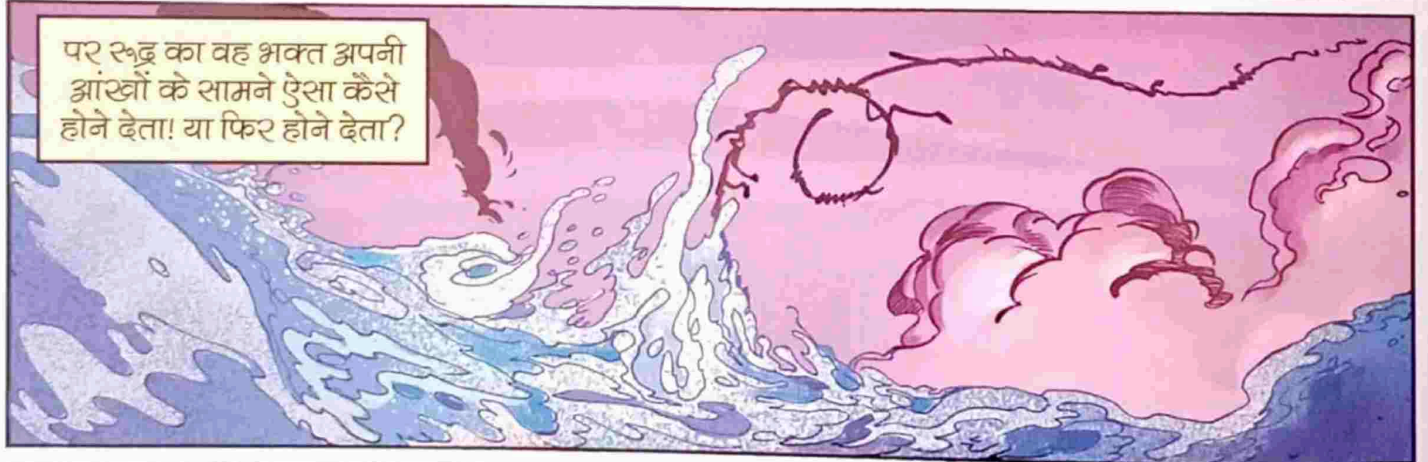
पर रुद्र का वह भक्त अपनी आंखों के सामने ऐसा कैसे होने देता! या फिर होने देता?

इस सवाल का जवाब शायद नागमणि की छलकती आंखों और अधरों पर खेलती मुस्कान में छुपा था।
मेरा बेटा!... मेरा बेटा!!
प्रथम खण्ड समाप्त
गाथा जारी है
नागपर्व
में

क्रमशः

ब्रह्मांड और सृष्टि स्थापना का सबसे महत्वपूर्ण अध्याय जो शुरू हो रहा है सृष्टि के संरक्षक नागों के सबसे पावन पर्व से, जो कहलाता है...
नागपर्व
नागराज
नाग ग्रंथ
श्रृंखला
खण्ड-2
राज कॉमिक्स बाय संजय गुप्ता पेश करते हैं
नरक नाशक नागराज का एक अविस्मर्णीय कॉमिक्स।
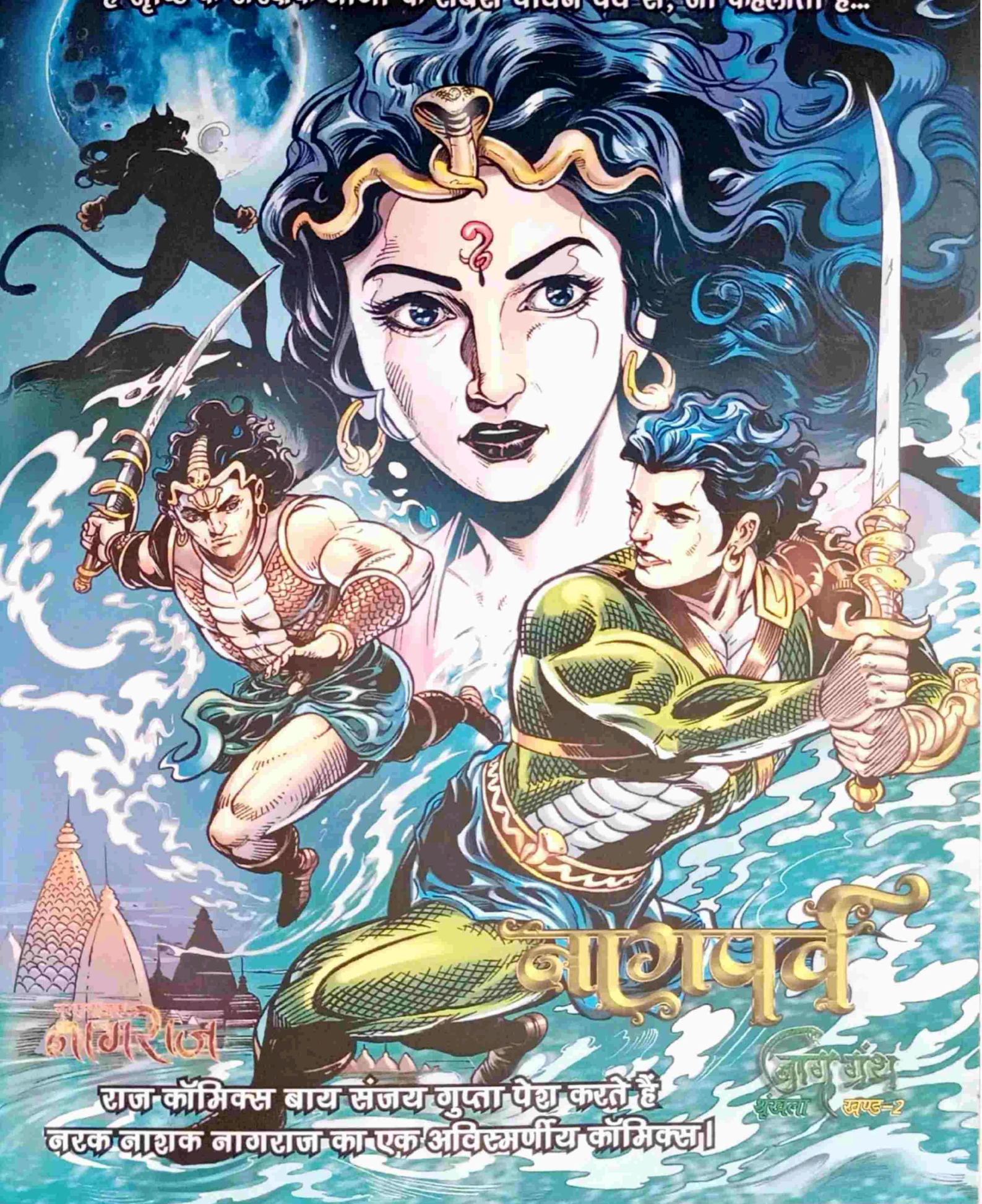
इंसान की सबसे बड़ी कमजोरी
होती हैं उसका अंदरूनी डर।
और जब वह डर साक्षात उसके सामने
आ कर खड़ा हो जाए, तब या तो
इंसान तर जाता है या फिर वह बन
जाता है उसके लिए ज़िंदगी भर का...
राज कॉमिक्स
By संजय गुप्ता
सुपर कमांडो ध्रुव
ट्रैप
राज कॉमिक्स बाय संजय गुप्ता पेश करते हैं सुपर कमांडो ध्रुव की बहुप्रतीक्षित
श्रृंखला नियो का प्रथम भाग जिसमें आप भी हो कर रह जाएंगे ट्रैप।

खून के कितने ही महासागर और जुर्म के कितने ही दरियाओं को पार कर गया डोगा।
फिर क्यों नही पार कर सका मुंबई की एक वीरान सड़क पर रखी वह...
कचरा पेटी
WANTED
डोगा
राज कॉमिक्स
संजय गुप्ता पेश करते हैं चम्बल का डोगा श्रृंखला का भावनाओं से ओतप्रोत झंझावाती आधारखंड।
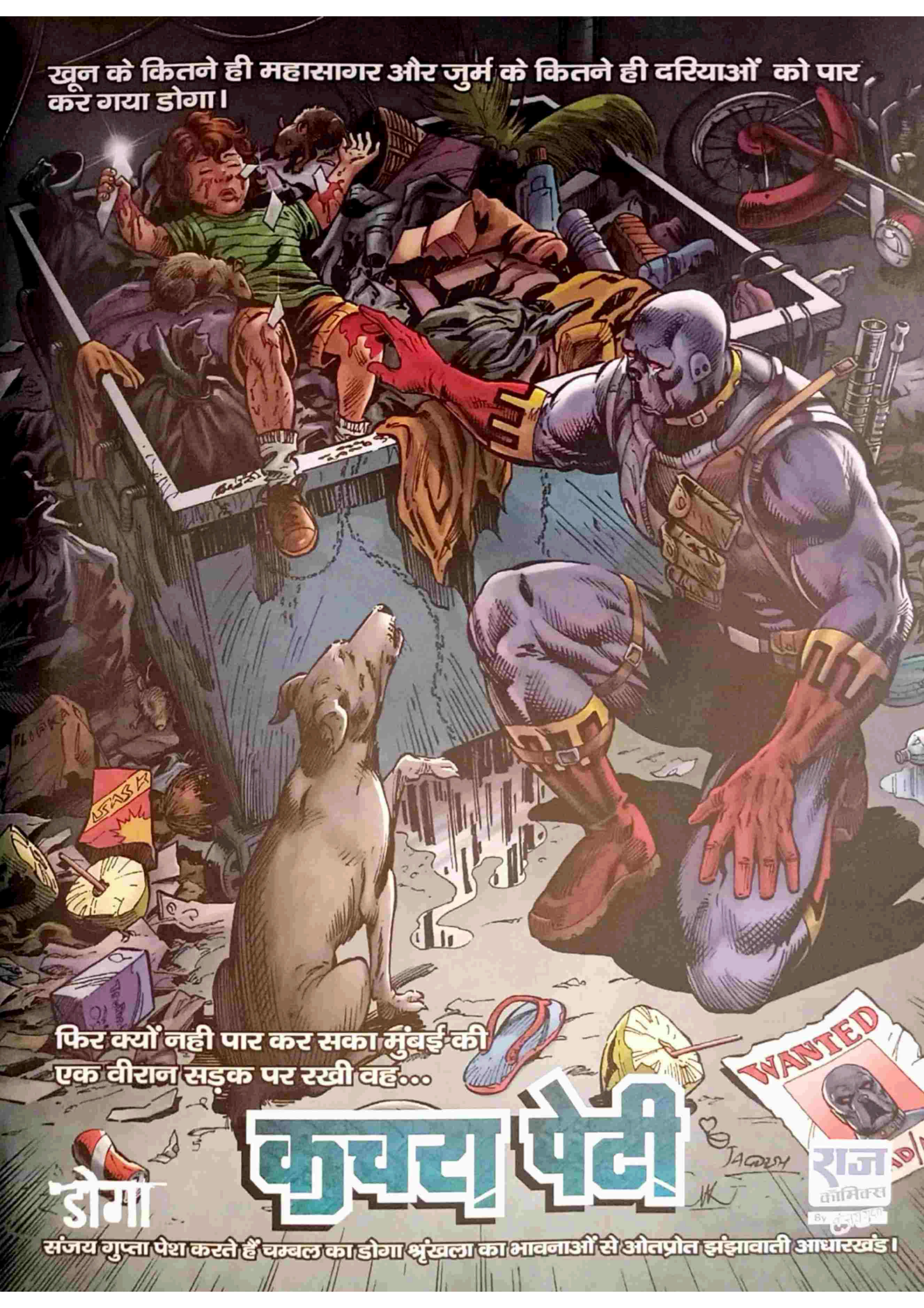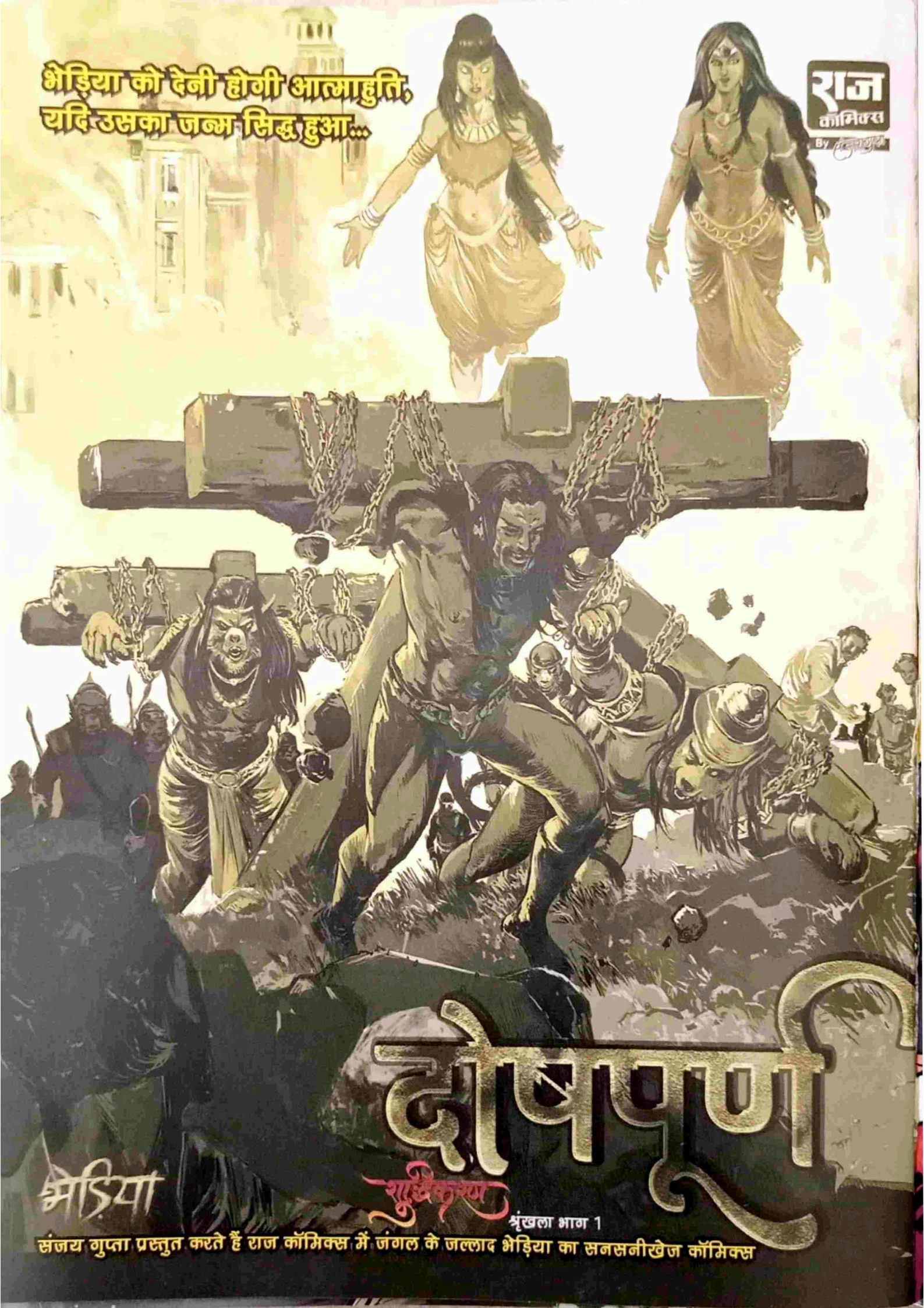
विश्वआतंकवाद के खात्मे के सफ़र आरम्भ करते ही विश्वरक्षक नागराज जा टकराया,मानव जाति के सबसे बड़े दुश्मन इच्छाधारी सर्पसम्राट तौसी से।
इच्छाधारी नागमणि प्राप्त करने के लिए रचे गए षड्यंत्र में नाग व सर्पशक्तियों के भीषण टकराव की वो भूली हुई हैरतअंगेज दास्तान जिसे मानवता की भलाई के लिए इतिहास के पन्नों से मिटा दिया गया आज फिर दुनिया के सामने खोली जा रही है।
दो महाप्रलयंकारी इच्छाधारी शक्तियों का भीषण संग्राम जिनमें कोई एक ही कहलाएगा
प्रलय का देवता
राज कॉमिक्स
समापन अंक
राज कॉमिक्स में नागसम्राट नागराज और सर्पसम्राट इच्छाधारी तौसी का प्रलयंकारी कॉमिक्स

राज
कॉमिक्स
By संजय गुप्ता
www.rajcomicsuniverse.com
मूल्य- ₹ 500/-
COMICS
ISBN 978-93-5468-184-4
9 789354 681844
SPCL-RCSG-01-H